श्रीजिनदत्तसूरि प्राचीन पुस्तकोद्धार फण्ड-ग्रन्थाङ्क ५६

अर्हम्

श्री वीश स्थानक तप-विधि

1150

अनूपशहर निवासी स्वर्गस्थ श्रीयुत् मोतीलालजी
झाड़चूर के द्रव्य सहाय्य द्वारा प्रकाशित

संशोधक :—

मुनि मंगलसागर

प्रकाशक :—

श्री जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार

सूरत

सं० २०१०　　भेंट　　प्रति १०००

पुस्तक मिलने का पता—
श्री जिनदत्तसुरि ज्ञानभण्डार
गोपीपुरा, शीतलवाड़ी उपाश्रय
सूरत (गुजरात)

२ पुस्तक मिलने का पता—
प्यारेलालजी ताम्बी जौहरी
ताम्बी-हाउस ६५।१ बिडन स्ट्रीट,
कलकत्ता।
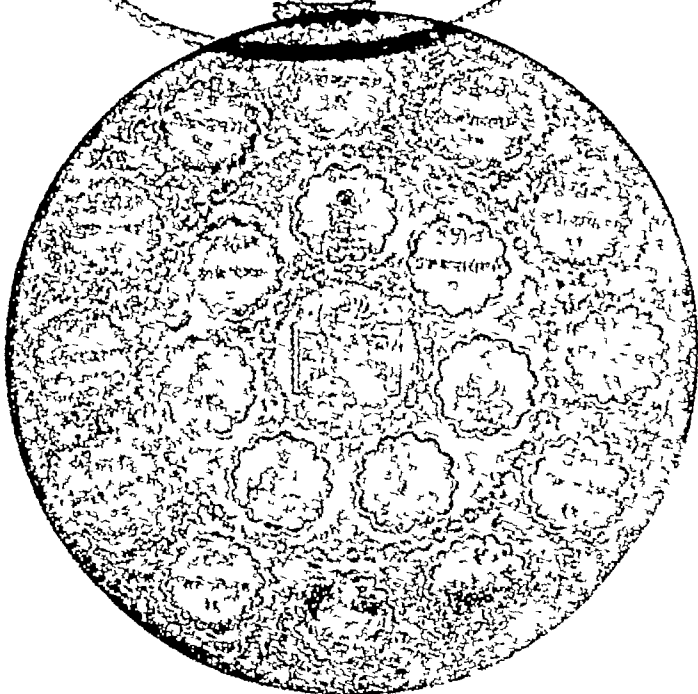
श्री बीस स्थानक पट्ट

ध्यानमें रखकर इस महान "वीस स्थानक 'पद" का आराधन करने में अवश्य उद्यम करें !

प्रस्तुत विषयक पुस्तकें भिन्न भिन्न स्थानों से अनेक बार प्रकाशित हो चुकी हैं, किन्तु उपरोक्त पुस्तकें दुष्प्राप्य होने से पुनः प्रकाशित की जा रही है, और इस पुस्तक के प्रकाशन में कलकत्ता निवासी जौहरी प्यारेलालजी ताकड़ी की धर्मानुरागिनी धर्मपत्नी सौ० श्राविका चुन्नीकुमारी ने अपने स्व० पूज्य पिता श्रीयुत मोतीलालजी झाडचूर के निज रक्षित द्रव्य प्रदान करके ज्ञानभक्तिका प्रशंसनीय कार्य किया है। आशा है भविष्यमें इसी प्रकार ज्ञान वृद्धि के कार्य करते रहेंगे।

यह पुस्तक पूर्व मुद्रित पुस्तकों के आधार पर ही प्रकाशित की गयी है, दृष्टि-दोष या मुद्रणदोष से जो अशुद्धि रह गयी हो तो सज्जन पुरुष उन्हें सुधार कर पढ़ें।

सं० २००४ विजयादशमी,
जैनभवन, कालाकर स्ट्रीट,
कलकत्ता।

मुनि मंगलसागर

ॐ नमः

श्री वीशस्थानक तप के दोहे

[जिस पदका खमासमण देना हो वहाँ पर उस पद का
दोहा प्रतिवार बोल कर खमासमण देना]

१ अरिहन्त पद

परम पंच-परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान।
च्यार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिन भाण॥

२ सिद्ध पद

गुण अनंत निर्मल थया, सहज स्वरूप उजास।
अष्टकरम मल क्षय करी, भये सिद्ध नमो तास॥

३ प्रवचन पद

भावामय औषधि सम, प्रवचन अमृत वृष्टि।
त्रिभुवन जीवने सुखकरी, जय जय प्रवचन दृष्टि॥

४ आचार्य पद

छत्तीस छत्तीसी गुणे, युग–प्रधान मुणींद।
जिनमत परमत जाणता, नमो नमो ते सूरीन्द॥

५ स्थविर पद

तजि परपरिणति रमणता, लहे निज भाव स्वरूप।
स्थिर करता भवि लोक नै, जय जय स्थविर अनूप॥

६ उपाध्याय पद

बोध सूक्ष्म विणु जीव नै, न होय तत्त्व प्रतीत।
भणे भणावै सूत्र नै, जय जय पाठक गीत॥

७ साधु पद

स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग।
साधे शुद्धा नन्दता, नमो साधु शुभ रंग॥

८ ज्ञान पद

अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भव भ्रम भीति।
सत्य धर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञान नी रीति॥

९ दर्शन पद

लोकालोक ना भाव जे, केवली भासित जेह ।
सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥

१० विनय पद

शौच मूल थी महा गुणी, सर्व धर्म नो सार ।
गुण अनंत नो कंद ए, नमो विनय आचार ॥

११ चारित्र पद

रत्नत्रयी विनु साधना, निष्फल कही सदिव ।
भाव रयण नुं निधान छे, जय जय संजम जीव ॥

१२ ब्रह्मचर्य पद

जिन प्रतिमा जिन मन्दिरा, कंचन ना करे जेह ।
ब्रह्मव्रत थी बहु फल कहै, नमोनमो शीयल सुदेह ॥

१३ क्रिया पद

आतम बोध बिनु जे क्रिया, ते तो बालक चाल ।
तत्त्वारथ थी धारिये, नमो क्रिया सुविशाल ॥

१४ तप पद

कर्म खपावे चीकणा भाव मंगल तप जाण ।
पच्चास लब्धि उपजे जय जय तप गुण खान ॥

१५ गोयम पद

छट्ठ छट्ठ तप करे पारणो, चउनाणी गुणधाम।
ए सम शुभ पात्र को नहीं, नमो नमो गोयम स्वाम॥

१६ जिन पद

दोष अढारे क्षय थया, उपज्या गुण जस अंग।
वैयावच्च करिये मुदा, नमो नमो जिन पद संग॥

१७ संयम पद

शुद्धातम गुण मां रमें, तजि इन्द्रिय आशंस।
थिर समाधि संतोषमां, जय जय संजम वंश॥

१८ अभिनव ज्ञान पद

ज्ञान वृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल।
अजर अमर पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल॥

१९ श्रुत पद

वक्ता श्रोता योग थी, श्रुत अनुभव रस पीन॥
ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुख लीन॥

२० तीर्थ पद

तीर्थ यात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज।
परमानन्द विलासतां, जय जय तीर्थ जहाज॥

समाप्त

* ॐ अर्ह नमः *

श्री बीसस्थानक तप करण विधि

शुभ दिन शुभ मुहूर्त के समय नन्दी की स्थापना करके सुगुरू के पास विधिपूर्वक बीस स्थानक तप की ओली उच्चरे। एक ओली दो मास से छः मास पर्यन्त पूरी करे, यदि छः मास के अन्दर एक ओली पूरी न कर सके तो, उसको फिर से दूसरी ओली शुरु करनी होगी, क्योंकि वह गिनती में नहीं आती। एक ओली के बीस पद होते हैं, उन बीसों पदों में से, बीस दिन में एक पद की आराधना करनी होती है। इस तरह कुल चार सौ दिन में ओली पूर्ण होती है। अगर ऐसा न हो सके तो बीस दिन में एक एक पद की आराधना करके ओली पूर्ण करे (कुल बीस दिन में)। शास्त्रानुसार तो यदि शक्ति हो तो अट्ठम (तेला) व्रत करके बीस स्थानक तप का आराधन करे, क्रमशः बीस

अट्ठम (तेला) कर लेने पर एक ओली पूरी होती है,
इस प्रकार (४००) चार सौ अट्ठम के कर लेने पर बीस-
स्थानक तप का आराधन समाप्त होता है। यदि अट्ठम
करके ओली का आराधन करने की शक्ति न होतो, यथा
शक्ति (छट्ठ) बेला, उपवास, अथवा आयंबिल, या
एकासणा, करके ओली का आराधन करे, तपस्या के
दिन यथा शक्ति अष्टप्रहरी या चौपहरी पौषध करे,
समस्त पदों की आराधना के दिन पौषध करे, यदि
ऐसा न बन सके तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, साधु
चारित्र, गोतम, ओर तीर्थ, इन सात पदों के आराधन
के समय अवश्य पौषध करे। पौषध करने की सामर्थ्य
न हो तो देसावगासिकव्रत जरूर करे, अथवा यथा-
शक्ति सावद्य व्यापार का त्याग करे, व्रत करने वालों
को विशेष ख्याल रखना की जन्म, मरणादिक के सुतक
की तपस्याएं ओली की संख्या में नहीं ली जाती,
: सुतक वगेरह का ध्यान रखे, स्त्रियों के लिये ऋतु
की तपस्या भी वर्जनीय है, तपस्या के दिन दो
बार प्रतिक्रमण करे, तीन वार देव-चंदन करे, जिन मंदिर

में जाके दर्शन व पूजन करे, तप पदके संख्या के अनुसार साथियों को करे, नैवेद्य चढ़ावें, तपकी संख्या प्रमाणसे प्रदक्षिणा दे, और खमासमणा दे, माला फेरे, काउसग्ग करे, सावद्य व्यापार का यथाशक्ति त्याग करे, असत्य न बोले, जमिन पर संथारा कर सोवे, ब्रह्मचर्य पाले, पारणा के दिन देवदर्शन करे, सुगुरु को आहार वोहरा के पारणा करे, बीस स्थानक तप पूर्ण होने पर विधि पूर्वक गुरु के पास तप पारणेकी विधि करे, यथा-शक्ति उजमणो करे, साहमिवत्सल करे, प्रसन्न चित से विधि पूर्वक आराधन करनेवाला प्राणी स्वकर्म खपा के मोक्ष महेल में जाकर अनन्त सुख का भागी होता है,

❀ इति तप करण विधि ❀

अथ प्रथम पदाराधन विधि ॥१॥

(माला—)

। "ॐ नमो अरिहंताणं" इस पद को २० माला फेरे ।

(खमासमण—)

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

२ पञ्चवर्ण जानुदघ्न पुष्पप्रकार प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः ।

३ अतिमधुर द्रव्य माधुर्य्यतोऽपि मधुरतम दिव्यध्वनि प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

४ हेमरत्नजटितदण्डस्थितात्युज्वल चमरयुगल वीजितव्यजनक्रियायुक्तसत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

५ सुवर्णदण्ड रत्नजटित सदा सहचारि सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

६ तरुण तरणि तेजसोऽप्यतिभास्कर तेजोयुक्त भामण्डल सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

७ दुन्दुभि प्रभृत्यनेक आकाशस्थित वादित्र वादन-रुप सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

८ मुक्ताजाल झुम्बनक युक्त छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

९ स्वपराबाध निवारकातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः

१० पञ्चत्रिंशद्वाणी गुणयुक्त सुरासुर देवेन्द्र नरेन्द्राणां पूज्याय श्रीमदर्हते नमः

११ सर्व भाषानुगामी सकल संशयोच्छेदक वचनातिशयाय श्रीमदर्हते नमः

१२ लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञानरूप ज्ञानातिशयेश्वराय श्रीमदर्हते नमः

(१२ लोगस्सका काउ सग्ग करे)

स्तुति—

अरिहन्त अरुहन्त, अरहन्त, देवाधिदेव, परमेश्वर, परम करूणा निधान, महागोप, महामाण, महानिर्यामक, महासार्थवाह, जगद्वैद्य, जिनेश्वर, तीर्थङ्कर, विश्वम्भर, विश्वपते, विश्वोत्तम, त्रिकालवित्, सर्वज्ञ, सर्वदर्शिन,

देवाधिदेव, पुरुषोत्तम, वीतराग, जगन्नाथ जग द्बन्धो, जगत्तारण, बुद्ध भगवत विश्वानन्दिन्, सहजानन्दी, शुद्धचेतना, धर्ममयी, व्यक्तस्वभावमयी, धर्मरत्न, रत्नागर, धर्मदेशक भाव धर्मदाता, परमात्मन् परम-दर्शी, परमगुरो, परमोपकारिन्, परमसंसारतारक, अशरणशरण, तरणतारण, भवभयहरण, इत्यादि भगवत सहस्र नाम का पाठ करे और अगणित गुण गणोंसे भूषित श्रीमदर्हतजीवकों प्रतिक्षणमें वन्दना हो और हमारा त्राण शरण गति, मति सब अरिहन्त भगवान है, और श्री अरिहन्त भगवान् हमारी श्रद्धा सफल करे।

इत्यादि प्रकारसे भगवानकी स्तुति करे और श्वेतवर्ण अरिहन्तका गुण कीर्तन करे, पारणाके दिन अष्टप्रकारी, सत्रहप्रकारी एकवीसप्रकारी, अष्टोत्तरी आदि पूजाएं एवं यथाशक्ति भक्ति करे, नूतन मुकुट कुण्डल प्रभृति भूषण चढ़ावे, छत्र चमर रत्नतिलक चढ़ावे, शरीरमार्जनके लिये (मोरपोच्छि)वस्त्र तथा चन्द्रवा चढ़ावे, समवशरणकी रचना कराकर तीसरे शालमें सिंहासनपर प्रभुको विराजमान कराके आगे मंत्र पूतधान्यसे प्राकारकी

रचना करे और इन्द्रध्वज चढ़ावे रौप्यमयी अष्ट माङ्ग-लिक चढ़ावे, सुन्दर वर्ण गंधयुक्त पुष्प फलादि सामान रखे, और विविध प्रकारका पक्वान चढ़ावे, भण्डारमें यथाशक्ति द्रव्य चढ़ावे, केवलज्ञानका उत्सव करे और जिनबिम्ब करावे, इस प्रकार छ मास पर्यन्त अरिहन्त पदके आराधनसे सर्वेष्ट सिद्धि होती है। अरिहन्त पद के आराधनसे देवपालादिक सुखी हुए।

॥ इति प्रथम पदाराधन विधि ॥

॥ अथ द्वितीय पदाराधन विधि ॥२॥

(माला—)

"ॐ नमो सिद्धाणं" इस पदकी २० माला फेरे।

(खमासमण—)

१ मतिज्ञानावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः

२ श्रुतज्ञानावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः

३ अवधिज्ञानावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः

४ मनःपर्यवज्ञानावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
५ केवलज्ञानावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
६ निद्रादर्शनावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
७ निद्रानिद्रादर्शनावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
८ प्रचला दर्शनावरणि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
९ प्रचलाप्रचलादर्शनावर्णिकर्मरहिताय सिद्धाय नमः
१० स्थीनर्द्धिदर्शनावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
११ चक्षुदर्शनावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१२ अचक्षुदर्शनावणि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१३ अवधि दर्शनावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१४ केवल दर्शनावर्णि कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१५ शातावेदनी कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१६ अशातावेदनी कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१७ दर्शन मोहनी कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१८ चारित्र मोहनी कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
१९ नरकायुः कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२० तिर्यगायुः कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
मनुष्यायुः कर्म रहिताय सिद्धाय नमः

२२ देवायुः कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२३ शुभनाम कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२४ अशुभनाम कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२५ उच्चैर्गोत्र कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२६ नीचैर्गोत्र कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२७ दानान्तराय कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२८ लाभान्तराय कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
२९ भोगान्तराय कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
३० उपभोगान्तराय कर्म रहिताय सिद्धाय नमः
३१ वीर्यान्तराय कर्म रहिताय सिद्धाय नमः

(३१ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

अनन्त ज्ञानमयी, अनन्त दर्शनमयी, अनंत चारित्र-मयी, अनन्त अव्याबाध सुखमयी, अनन्त अरूपी, शुद्ध चैतन्य विलासमयी, अनन्त अगुरु लघु गुणमयी, अनंताक्षय स्थितिमयी, अनन्तवीर्य शक्तिमयी, अनाद्यनन्त नित्यानन्द, अविनाशी, अवैरी, अवेदी, अनुपाधि, अजर, अमर, अव्यय, अकलङ्क, अरोगी, अक्लेशी, अयोगी,

अबन्धी, असङ्गी, अकामी, चिदानन्दघन, चिद्भोगी, चिद्विलासी, चिद्रूपी, अचल, अमल, चरमज्योतिः परमात्मा, परमेश्वर, सहजानन्दी, सहजस्वरूपी, पूर्णानंद, सकललोकाग्रस्थायी, अनन्त गुणनिधान, ऐसे गुणों करके युक्त सिद्ध भगवानको हमारी प्रतिक्षण वन्दना रहे, यही स्वरूप हमारा साध्य है, इसी स्वरूपकी सेवा हमारा परम साधन है, इन्हींके नाम स्मरणसे हमारा जन्म सफल है।

इस प्रकार स्तुति करनेके बाद रातदिन रूपातीत स्वरूप रक्तवर्णका ध्यान करे और पारणाके दिन चौवीस तीर्थंकरोंके १४५२ गणधरोंका पूजन करे। तथा सिद्ध-क्षेत्र श्री शत्रुंजय, गिरिनार, आबु, अष्टापद, समेतशिखर चम्पापुरी, पावापुरी, कोटिशीलाकी स्थापना करके अष्ट-प्रकारी प्रभुकी पूजा यथाशक्ति भक्तिपूर्वक करे, पञ्चवर्ण धान्यसे त्रिलोक नालिका पट्ट रचना करे, तथा घृतका .९ पर्वतको रचना करे, और सिद्ध कल्याणका उत्सव करके, सिद्धपद उच्चारण करके द्रव्य याचक को दे। सिद्ध पदके आराधना से हस्तिपाल राजाको ज्ञान हुआ।

॥ इति द्वितीय पदाराधन विधि । ॥

अथ तृतीय पदाराधन विधि ॥३॥

(माला—)

ॐ नमो पवयणस्स" इस पदकी २० माला फेरे ।

(खमासमण—)

१ सर्वतः प्राणातिपात विरताय श्री प्रवचनाय नमः
२ सर्वतो मृषावाद विरताय श्री प्रवचनाय नमः
३ सर्वतो अदत्तादान विरताय श्री प्रवचनाय नमः
४ सर्वतो मैथुन विरताय श्री प्रवचनाय नमः
५ सर्वतः परिग्रह विरताय श्री प्रवचनाय नमः
६ देशतः प्राणातिपात विरताय श्री प्रवचनाय नमः
७ देशतो मृषावाद विरताय श्री प्रवचनाय नमः
८ देशतो अदत्तादान विरताय श्री प्रवचनाय नमः
९ देशतो मैथुन विरताय श्री प्रवचनाय नमः
१० देशतः परिग्रह विरताय श्री प्रवचनाय नमः
११ दिशि परिमाणव्रत युक्ताय श्री प्रवचनाय नमः
१२ भोगोपभोग परिमाणव्रत युक्ताय श्री प्रवचनाय नमः
१३ अनर्थदण्ड विरताय श्री प्रवचनाय नमः

१४ सामयिकव्रत युक्ताय श्री प्रवचनाय नमः

१५ देशावगासिक व्रत युक्ताय श्री प्रवचनाय नमः

१६ पोसहोपवासव्रत युक्ताय श्री प्रवचनाय नमः

१७ अतिथिसंविभाग व्रत युक्ताय श्री प्रवचनाय नमः

१८ विधिसूत्रागमाय श्री प्रवचनाय नमः

१९ वर्णक सूत्रागमाय श्री प्रवचनाय नमः

२० भय सूत्रागमाय श्री प्रवचनाय नमः

२१ उत्सर्ग सूत्रागमाय श्री प्रवचनाय नमः

२२ अपवाद सूत्रागमाय श्री प्रवचनाय नमः

२३ उभय सूत्रागमाय श्री प्रवचनाय नमः

२४ उद्यम सूत्रागमाय श्री प्रवचनाय नमः

२५ सर्वनय समूहात्मक श्री प्रवचनाय नमः

२६ सप्तभङ्गी रचनात्मकाय श्री प्रवचनाय नमः

२७ द्वादशाङ्गगणीपिटकाय श्री प्रवचनाय नमः

(२७ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

श्री जिनेश्वर परमेश्वर देवने जिसको स्थ
क्रिया, जो साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका

चतुर्विध संघ, तथा श्रीमुखसे भाषित स्याद्वाद मुद्राङ्कित जो सिद्धान्त तदनुकूल श्रद्धा प्रवर्तन करनेवाला है वह श्री संघ प्रवचन कहा जाता है, वह कैसा है, जैसे रत्नों को खान, रोहणाचलके समान गुणोंकी खान श्री संघ प्रवचन है, जैसे तारोंका स्थान आकाशके समान गुणोंका स्थान श्री संघ प्रवचन है, जैसे कल्पवृक्ष सदा स्वर्गमें रहता है। वैसे ही सर्व गुण सर्वदा श्री संघ प्रवचनमें रहते हैं, और कमलोंका आकर सरके समान श्री संघ प्रवचन गुणोंका आकर है, जैसे जलका अविनाशि कोश समुद्र है वैसे गुणोंका खजाना श्री संघ प्रवचन है, तेज-पुञ्ज जैसे सूर्य है वैसे गुण पुञ्ज श्री संघ प्रवचन है, संपूर्ण बीजोत्पत्तिके अवन्ध्य हेतु पुष्करावर्त मेघके समान सम्यग-गुण बीजोत्पत्तिका हेतु श्री संघकी भक्ति है, जैसे अमृतपानसे सर्व विष नष्ट होता है, उसी प्रकार प्रवचना-मृतपानसे परम मिथ्यात्वका नाश होता है, याने श्री संघ का शुभ दृष्टि भव्योंके राग द्वेषादिक भावरोगोंको हटाने में अमृतके समान काम देते हैं, ऐसा श्री प्रवचन संघ अपार संसाररूपी समुद्रको उतर कर साश्वत् विलास

मुक्तिपदमें विराजता है ऐसा श्री संघजीको " "
हमारी वन्दना रहे औ भव भवमें श्री संघमें हमारी
भक्ति बनी रहे ।

इस प्रकार स्तुति करके श्री सिद्धान्तका विधिपूर्वक
कर्पूरादि सुगन्ध वास धूपादिसे पूजन करे और यथाशक्ति
पुस्तकका उपकरण करावे, प्रभावना करे, साधु साध्वी
प्रमुखको औषध, अन्न, वस्त्र प्रभृति द्रव्य यथा योग्य देवे
और दिनरात संघके गुणग्रामको गान करे, इस प्रकार
तृतीयपदके आराधनसे सर्वेष्ट सिद्धि होती है । प्रवचन
पदके आराधनसे भरतादिको केवल ज्ञान हुआ ॥

॥ इति तृतीय पदाराधन विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ पदाराधनविधि ॥४॥

(माला—)

"ॐ नमो आयरियाणं" इस पदकी २० माला फेरे ।

(खमासमण —)

१ प्रतिरूपगुणधराय श्री आचार्याय नमः

२ तेजस्वीगुणधराय श्री आचार्याय नमः

३ युगप्रधानागमाय श्री आचार्याय नमः

४ मधुरवाक्यगुणधराय श्री आचार्याय नमः

५ गम्भीरगुणधराय श्री आचार्याय नमः

६ सुबुद्धिगुणधराय श्री आचार्याय नमः

७ उपदेशतत्पराय श्रो आचार्याय नमः

८ अपरिश्राविगुणधराय श्री आचार्याय नमः

९ चन्द्रवत्सौम्यत्वगुणधराय श्रो आचार्याय नमः

१० विविधाभिग्रहमतिधराय श्री आचार्याय नमः

११ अविकथक गुणधराय श्री आचार्याय नमः

१२ अचपल गुणधराय श्री आचार्याय नमः

१३ संयमशीलगुणधराय श्री आचार्याय नमः

१४ प्रशान्तहृदयाय श्री आचार्याय नमः

१५ क्षमागुणधराय श्री आचार्याय नमः

१६ मार्दवगुणधराय श्री आचार्याय नमः

१७ आर्जवगुणधराय श्री आचार्याय नमः

१८ निर्लोभतागुणधराय श्री आचार्याय नमः

१९ तपोगुणयुताय श्री आचार्याय नमः

२० संयमगुण युताय श्री आचार्याय नमः

२१ सत्यधर्म युक्ताय श्री आचार्याय नमः
२२ शौचगुण युक्ताय श्री आचार्याय नमः
२३ अकिञ्चन गुणयुताय श्री आचार्याय नमः
२४ ब्रह्मचर्य गुणयुताय श्री आचार्याय नमः
२५ अनित्य भावना भाविताय श्री आचार्या नमः
२६ अशरण भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
२७ संसार भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
२८ एकत्व भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
२६ अन्यत्व भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
३० अशुचि भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
३१ आश्रव भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
३२ संवर भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
३३ निर्जरा भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
लोकस्वभाव भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
बोधिदुर्लभ भावना भाविताय श्री आचार्याय नमः
दुर्लभ धर्मसाधक भावना भाविताय श्री आचार्यायनमः

(३६ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति —

श्रीआचार्य, परमेष्ठी सकल मुनि श्रेष्ठ, गुणगणी ज्येष्ठ, शास्वत, धीर, प्रवचन प्रकाशक, प्रवचनाधार, साधनैश्चक्षुभूत, आलम्बन भूत, मेढी भूत, सारण, वारण, चोयण, पडिचोयणा कुशल, तीर्थङ्करोपम, बहु श्रुत, क्रियाधार, धर्माधार, स्वपर समयज्ञ, परहृदयाकूतज्ञ, द्रव्य क्षेत्र काल भावको जाणने वाले, कुत्तियावण* दुकानके समान, सूरिमन्त्रधारी, गणधर, गणी, गच्छस्त-म्भपद धारी निर्दम्भ, श्रेष्ठ सुगुण गणि, पिटकधारी, शासनोन्नतिकारी, शासनोद्योतकारी, अर्थधर, सूत्रधर, सदनुयोगधर, शुद्धानुयोगधर, ज्ञानभोगी, अनुभव योगी, अनुद्धान प्रवचनद्वार, आज्ञाऐश्वर्यधर, भट्टारक, भगवान्, महामुनि मुनिसेव्य, मुनिनायक गच्छभार धुरन्धर, मार्गज्ञ मार्गदर्शी, निश्चयानुभव स्पर्शी, अक्रोधी; जगप्रतिबोधी, अमानी, नित्य शुद्धध्यानी, अमायिक, रत्नत्रय साधक असहायी, अलोभी, अक्षोभी, शुद्धभाषी, गुणगणालङ्कृत ॥

ऐसे आचार्य भगवानको हमारी त्रिकाल वन्दना है,

---

* कुत्रीकायण याने जिस दुकानमे सर्व वस्तु मिले

हमारे सम्यगाराधनसे सहाय शरण त्राण मति गति श्री आचार्य पूज्य है।

इस पदके आराधन करण में दिनरात पौषध चौविहार उपवास करना चाहिये पीछे यथाशक्ति पारणा, अतिथीसंविभाग करे तथा मुनिको अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, औषध, पुस्तक, उपकरण, प्रभृति से प्रतिलाभ करावे, आचार्य सेवासे ही सुलभ बोधी होता है, इस तरहसे चतुर्थपद का आराधन करनेसे अभिमत सिद्धि होती है॥ आचार्य पद आराधनसे पुरुषोत्तमनृपने तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन किया॥

॥ इति चतुर्थ पदाराधन विधि ॥

॥ अथ पञ्चम पदाराधन विधि ॥५॥

(माला—)

"ॐनमो थेराणं" इस पदकी २० माला फेरे।

पञ्चम पदका उपदेश सुने॥ यथा-स्थविरेषु द्विभेदेषु, लोकलोकोतरेषु च। यो भक्तिं कुरुते भावाद् भवद्वय

सुखावहा ॥१॥ लौकिके पितरादिनाँ नमस्कारं करोति यः तीर्थयात्रा फलं तस्य सर्वदापि सुखा वहम् ॥२॥ लोकोत्तराश्च ये वृद्धा महाव्रत विभूषिताः । निःसंगवृत्तयस्त्रिधा, पर्यायादि त्रिभेदतः ॥३॥ पर्यायेण विंशताब्दा वयसा षष्टि वार्षिका ॥ श्रुतेन समवायाङ्ग, साध्येति स्थविरात्रिधा ॥ ४ ॥ स्थविराणां त्रिभेदानान्तेषामन्नादि वस्तुभिः । वात्सल्यं भक्तिभिस्तुल्यम् कुर्वाणोङ्गी गुणोज्वलः ॥ ५ ॥वस्त्रपात्रं भक्तपानं पवित्रं, स्थानं ज्ञानं भेषजं पुण्य हेतु ये यच्छन्ति स्वात्मभावैकसारं ते सर्वाङ्गि सौख्यमासादयन्ति ॥ ६ ॥इति॥

(खमासमण---)

१ श्री नमोलौकिक स्थविरदेशकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः

२ श्री देशस्थविर देशाकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः

३ श्री ग्रामस्थविर देशकाय लोकोत्तरस्थविराय नमः

४ श्री कुलस्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविराय नमः

५ श्रीलौकिक कुल स्थविर देशकाय लो० स्थ० नमः

६ श्रीलौकिक गुरु स्थविर देशकाय लो० स्थ० नमः
७ श्री लोकोत्तर श्री संघ स्थविराय नमः
८ श्री लोकोत्तर पर्याय स्थविराय नमः
९ श्री लोकोत्तर श्रुत स्थविराय नमः
१०श्री लोकोत्तर वयः स्थविराय नमः
(२०लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति---

जगत्में स्थविर दो प्रकारके होते हैं एक लौकिक, दूसरे लोकोत्तर, उसमें देशवृद्ध, नगर वृद्ध ग्रामवृद्ध, कुलवृद्ध, माता, पिता, प्रमुख लौकिक वृद्ध है उन्होंका विनय प्रतिपत्ति इस लोक में यशवृद्धि का कारण है और परलोकमें पुण्यका हेतु है जिससे तीर्थंकरादिक भी माता पिता प्रभृतिके विनयसे नहीं चूकते इससे लौकिक स्थविर का भी व्यवहारमें नमस्कारादि करना योग्य है, दूसरा लोकोत्तर स्थविर, धर्मगुरु तथा श्रीसंघ है, वह तीन प्रकारका है १ पर्याय स्थविर, २ वयः स्थविर, ३ श्रुत स्थविर, जिसका दीक्षा लिए २० वर्ष हो गया हो उसको

पर्याय स्थविर कहते हैं। १ जिसकी उमर साठ ६० वर्षसे अधिक हो उसको वयः स्थविर कहते हैं॥ २ और जो समवायङ्गसे उपर तक आगम पढ़ा हो उसको श्रुत स्थविर कहते हैं॥ ३ ये तीनों प्रकारके स्थविर शासनकी शोभा गणका भूषण, समस्त आचार विचारका सूर्यके समान प्रकाशक है, जिस कारणसे उपाध्याय प्रवर्तक गणावच्छेदक रत्नाधिककों प्रवर्तन कराता है। और मार्गसे शिथिल होता साधुओंको शिक्षा देकर स्थिर कराता है, उत्साहको बढ़ाता है, क्रियादिकमें पुष्ट करता है, जो पद प्राप्त नहीं है उसको पद प्राप्त कराता है, और स्थिर रखता है जैसे लोक नीतिमें भी वृद्ध के विगर घर नहीं शोभता वैसे ही वृद्ध या नायक वगर लस्कर, समुदाय, ग्राम नगर राजा, सभा, कुल, पञ्चायत, कलामर्म, बरात ज्ञाति वगैरह नहीं शोभता, इसी तरह स्थविर विना गच्छ नहीं शोभता, श्री सिद्धान्तमें भी श्रुतादि स्थविरको समुद्र,मेरु पर्वत, केवली, चक्रवर्ती राजाकी उपमा दी गई है, इस कारणसे स्थविरकी बहुमान विनय करके पढ़ते पढ़ाते हैं उन स्थविरोंसे विनयकी बुद्धि पुष्ट होती है, क्रियामें कैसे हैं

उन्हींसे कारसण (क्रिया) की वृद्धि पुष्ट हुई है तथा बहुत प्रकारके श्रुताधारी, क्रियाधारी, संयमधारी देखे जाते हैं उन्हींसे गुणदोषका आदर त्याग परिणति परिणाम भी पुष्ट है तीनों वुद्धी पुष्ट होती है, स्थविरोंको उत्पादिकी वुद्धि भी होती है क्योंकि वे जिनमार्गके धुरन्धर हैं श्री गौतमस्वामी भी श्रीकेशीकुमार वयः स्थविरकों वडा मानकर आप चलकर उसके स्थानपर गए और श्री केशीकुमारने भी श्रीगौतमको श्रुत स्थविर समझकर बहु मान प्रतिपत्ति करके और प्रश्नगोष्ठी करके पञ्चविध धर्म (पञ्च महा व्रत) अङ्गीकार किया, इसलिये मोक्षार्थींको परमोपकारी स्थविर मुनिराज है उस स्थविरकों नित्यप्रति त्रिकाल वन्दना हो, वह स्थविर हमारे मुक्ति साधनाका सहाय होवे ॥

चन्दन तैलादिका विलेपन करे और इस पदकी भक्तिके विषयमें स्थविर साधुको शुद्धमान आहार पानी वस्त्र पात्र कम्बल औषध प्रभृतिसे बहुत विनय करे हाथ जोड़ कर वन्दना करे सुखशाता पूछे, साधर्मिककी भक्ति कर, माता पिता आदि गुरुजनोंको यथायोग विनय भक्ति करे, स्थविरपदाराधनसे पद्मोत्तर राजा तीर्थंकरपद पाया

॥ इति स्थविर पदाराधन विधि ॥

॥ अथ षष्ठ पदाराधन विधि ॥ ६ ॥

(माला—)

"ॐ नमो उवज्झायाणं" इस पदको २० माला फेरे ।

(खमासमण--)

१ श्री आचाराङ्गश्रुत पाठकाय उपाध्याय नमः

२ श्रीसुयगडाङ्गश्रुत पाठकाय उपाध्याय नमः

३ श्रीठाणाङ्गश्रुत पाठकाय उपाध्याय नमः

४ श्रीसमवायाङ्गश्रुत पाठकाय उपाध्याय नमः

५ श्री भगवतीश्रुत पाठकाय उपाध्याय नमः

६ श्री ज्ञाता धर्मकथा श्रुत पोठकाय उपा० नमः

७ श्री उपासकदसा श्रुत पाठकाय उपा० नमः

८ श्री अन्तगडदश श्रुत पाठकाय उपा० नमः

९ श्री अनुत्तरोववाई श्रुत पाठकाय उपा०नमः

१० श्री प्रश्नव्याकरण श्रुत पाठकाय उपा० नमः

११ श्री विपाक श्रुत पाठकाय उपा० नमः

१२ श्री उववाइउपाङ्ग श्रुत पाठकाय उपा० नमः

१३ श्री रायपसेणीउपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

१४ श्री जीवाभिगमउपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

१५ श्री पन्नवणाउपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

१६ श्री जम्बूद्वीपपन्नत्तिउपाङ्गश्रुतपाठकायउपा० नमः

१७ श्री चन्द्रपन्नत्तिउपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

१८ श्री सूरपन्नत्ति उपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

१९ श्री निरयावली उपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

२० श्री कप्पिका उपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

२१ श्री पुष्पचूलिया उपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

२२ पुष्पीका उपाङ्ग श्रुत पाठकाय उपा० नमः

२३ वाह्निदशा उपाङ्गश्रुत पाठकाय उपा० नमः

२४ श्री द्वादशाङ्गीश्रुत पाठकाय उपा० नमः

२५ श्री द्वादशाङ्गीश्रुतार्था अध्यापकाय उपा० नमः

(२५ लोगस्स का काउस्सग करे)

स्तुति—

श्री उपाध्यायप्रभुजी, ज्ञान दर्शन चारित्रका निधान, श्री आचार्यजीके धर्मराजधानीका प्रधान, सकल नयनिक्षेपा माणगर्भित द्वादशाङ्गी जानने वाले, सुविहितगच्छप्रवृत्तिके

मण्डन, समस्त परमपदके साधक, मुनिवृन्दका सूत्रधार, सर्वजनोंसे अधिक बुद्धिमान, दुर्बोध शिष्यको सुबोध करनेमें कुशल, जड्य ग्रन्थिको चूर्ण करनेमें वज्र मुशलके समान, अवारित भव्य प्रतिबोधनमें सावधान, अविच्छिन्न वस्तु स्वरूपका उपयोगमें दत्तावधान, सुतरां देशकाल क्षेत्रभावादि विशेष का जानकर, सुगुप्त परहृदयाकूतज्ञ, आचार्यसे सूत्रार्थ दानाधिकार रूप विशेषाधिकार प्राप्त, और अगणित गुणगणका आधार अशेष भाविकजनोंके संशयको हरनार, सर्वको धर्म मार्गमें स्थिर करनार, परमपात्र, इस प्रकारके श्री उपाध्यायजी, वाचक, पाठक, अध्यापक, सिद्धसाधक, श्रुतवृद्ध, कृतकर्मा, शिक्षक, दीक्षक, स्थविर, चिरन्तन, परीक्षक, परीश्रम, वृतमाल साम्यधारी विदित पदार्थ विभाग अप्रमादी, सदा निर्विषादी, आत्मप्रवादी, अद्भयानन्दी इत्यादि यथार्थ नामोंसे सुशोभित जगद्बन्धु, जगद्भ्राता, जगदुपकारी श्री उपाध्यायजीको प्रतिक्षण हमारी वन्दना रहे ॥

इस पदके आराधनमें भी यथाशक्ति पौषध करे श्रद्धा भक्तिसे उपाध्यायजीका विनय करे वस्त्र पात्र कम्बल

औषध प्रभृति दान करे, मुनिराजजी को चन्दनादि विलेपन करे, उपाध्यायजीका नवाङ्ग पूजन करे, (अथवा) जिसके पास धर्मशास्त्र पढ़ा हो उसकी यथोचित भक्ति करे, उपकारका स्मरण करे, सिद्धान्त लिखावे, ज्ञान भण्डार करावे, इस प्रकार उपाध्याय पदका आराधन करने से सर्वेष्टका लाभ होवे, उपाध्याय पदाराधनसे महेन्द्र-पाल राजा देवेन्द्र हुआ ॥

॥ इति षष्ठ पदाराधन विधि ॥

॥ अथ सप्तम पदाराधन विधि ॥७॥

(माला----)

"ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं" इस पदकी २० माला फेरे।

(खमासमण--)

१ पृथ्वीकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः
२ अपकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः
३ तेजःकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

४ वायुकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

५ वनस्पतिकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

६ त्रसकाय रक्षकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

७ सर्वतः प्राणातिपात विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

८ सर्वतः मृषावाद विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

९ सर्वतोऽदत्तादान विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१० सर्वतो ब्रह्म सेवितेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

११ सर्वतः परिग्रहे विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१२ सर्वतो रात्रि भोजन विरतेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१३ लोभादि कषाय निग्रहकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१४ श्रोत्रेन्द्रिय विषय निग्रहकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१५ चक्षुरिन्द्रियविषय निग्रहकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१६ घ्राणेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१७ रसनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१८ स्पर्शनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

१९ शीतादि परीषहः सहायः सर्व साधुभ्यो नमः

२० क्षमादि गुण धारकेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

२१ भावविशुद्धेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

२२ मनोयोग शुद्धेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः
२३ वचन योग शुद्धेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः
२४ काययोग शुद्धेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः
२५ मरणान्त उपसर्ग सहेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः
२६ अङ्गोपाङ्ग संकोचन संलीनता गुण युक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः
२७ निर्दोष संयम योग युक्तेभ्यः सर्व साधुभ्यो नमः

(२७ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

साधु मुनिराज, पञ्च समिति समता, त्रिगुप्ति गुप्ता, पृथिव्यादि छ कायका रक्षक, गुणगणो कुलगह, सदा शुद्धात्म स्वपरिणतिमें रमण करनार, अशुद्ध परपरिणतिका त्याग करनार, इन्द्रिय गणको दमनकार, सर्व परीसह उपसर्गादिक क्षमा सहित क्षमता, नवा नवा दुष्कर अभिग्रह धारक, अप्रतिबद्ध विहारकारक, रत्नावली, कनकावली, मुक्तावली, मुक्ताकण्ठाभरण गुणरत्न संवत्सर प्रमुख दुष्कर तप करनार, आगमाज्ञाजित प्रमुख व्यवहारमें

विचरता, पञ्चविशुद्ध शुभका आचरण करता, दंभदोषको त्याग करता, प्रतिक्षण समता स्थाने स्थित रहता, अस्थिरताका कारण भयादिको नित्य त्यागता, भारंड पक्षीकी तरह अप्रमत्त भ्रमण करता, प्रतिक्षण नूतन-नूतन योग साधनमें निरत, प्रति दिन नये- नये शास्त्रोंको अध्ययन करता, तृण मणि हार अहिरत्न पाषाण आदि सब अनुकूल प्रतिकूल वस्तुको समान गिनता, तीव्र श्रद्धा पूर्वक आगम रूप कूठारसे संशयवनको छेदन करनार, सर्वत्र मोहशत्रुको पराजय करनार, एक प्रकारसे श्री जिनाज्ञाका पालक, सर्वतः असंयमको हटावनार, द्विविध धर्मका उपदेशक, रागद्वेष बन्धका दूर करनार, त्रिविध रत्नत्रयीका धारक, दुष्ट मनोयोगादि दण्डत्रय दूरकारक, चतुर्विध देशनाका दाता, क्रोधादि चतुर्विध चतुष्कषायका घातक, पञ्चविध महाव्रतधारी, पञ्चप्रमाद दूरकारी, षड्विध काय प्रतिपालक, अन्तरङ्ग छ शत्रुओंका नाशक, सप्तविध नय देशनाका दाता, सप्त महाभयसे त्राता, अष्टविध अष्टाङ्गयोगका साधक, अष्टमद स्थान का जेता, नवविध ब्रह्मगुप्तिका धारक, देवादि नवनिदान परिहारी,

दशविध यतिधर्मकेधारी, जिसने दशदोषोंको शोधन किया है वह, अगणित गुणगणालंकृतगात्र, सप्तविंशति गुणयुक्त, ऐसे महात्मा, महानन्द, शिवार्थी, सन्यासी भिक्षु, निर्ग्रन्थी मधुकर वृत्ति, आत्मोपासक मुक्तमान, महर्षि शान्त, दान्त, अवधूत, शुद्धदेशी, शुद्धलेशी अकामी पूर्ण ब्रह्मचारी जागरिकतीर्थी पूर्णकाम अध्यात्मवेदी जिनज्येष्ठ-सुत उर्द्ध रेता, अनुभवी तारक त्रियोगी महाशय भद्रक तत्वज्ञानी वाचंयम मोहजयी ऋषि अलुब्ध अकिञ्चन सर्व सहन प्रतिकर्मा श्रमण समसय पण्डितपुरोग अमृत क्रिया विलासी वचन धर्मऋषि शुक्ल शुक्लाभिजाति अनुत्तरयोगी मग्न अतीन्द्रिय मुद्रितकरण अकर्मा महाबुद्धि महाविचक्षण, महासाधक परब्रह्मवेत्ता इत्यादि अनेक गुणरत्न मुनिराज भवसमुद्र तरणका जहाज, समस्त लोकका मित्र (अढ़ाइजेसु इत्यादि) इस प्रकार दो हजार कोड़ी साधुजी हैं उनको हमारी प्रतिदिन त्रिकाल वन्दना है वह घटी दिवस समय क्षण धन्य है जिसमें पूर्वोक्त साधुजीका दर्शन सेवन मेरेको प्राप्त होवे ऐसे साधु महाराज हमारे मुक्तिसाधनमें सहायक होवे ॥

इस पदके भक्तिके विषयमें छठ अठम दशम मास-क्षमण प्रमुख दुष्कर तप करनेमें तत्पर साधु तपस्वीका गौरव विवेक सहित करना चाहिये, साधुको वस्त्र पात्रादि १४ उपकरणका सहाय्य करे साधुओंको पुस्तक देवे, पुस्तकका उपकरण देवे, तपस्वी साधुका वैयावच्च करे, तपस्वी साधुका अङ्ग बिलेपन करे, उपाश्रय पोषधशाला बनावे। वृद्ध रोगी साधुओंको औषध प्रभृति देवे, दीक्षा-महोत्सव करे और अठारह शीलाङ्गरथ गाथाकी साधु-वंदना पढ़े। सप्तमपदके आराधनसे प्राणी अभिमत फलको प्राप्त होता है॥ साधुपदके आराधनसे वीरभद्र तीर्थंकर हुआ।

॥ इति सप्तम पदाराधन विधि ॥

॥अथ अष्टम पदाराधन विधि॥८॥

(माला—)

"ॐ नमो नाणस्स" इस पदकी २० माला फेरे।

(खमासमण—)

१ श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
२ चक्षुरिन्द्रिय व्यञ्जनावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
४ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
५ स्पर्शनेद्रिय व्यञ्जनावग्रहाय मतिज्ञानाय मनः
६ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
७ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
८ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
९ रसनेन्द्रियार्थावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
१० स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रहाय मतिज्ञानाय नमः
११ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः
१२ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः

१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः

१४ रसनेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः

१५ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मतिज्ञानाय नमः

१६ मन ईहा सम्यग श्री मतिज्ञानाय नमः

१७ श्रोत्रन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः

१८ चक्षुरिन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः

१६ घ्राणेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः

२० रसनेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः

२१ स्पर्शनेन्द्रियापाय मतिज्ञानाय नमः

२२ श्रोत्रेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः

२३ चक्षुरिन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः

२४ घ्राणेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः

२५ रसनेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः

२६ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः

२७ मनो धारणाय श्री मतिज्ञानाय नमः

२८ अक्षरश्रुत ज्ञानाय नमः

२६ अनक्षरश्रुत ज्ञानाय नमः

३० संज्ञिश्रुत ज्ञानाय नमः

३१ असंज्ञिश्रुत ज्ञानाय नमः

३२ सम्यक् श्रुत ज्ञानाय नमः

३३ मिथ्याश्रुत ज्ञानाय नमः

३४ सादिश्रुत ज्ञानाय नमः

३५ अनादिश्रुत ज्ञानाय नमः

३६ सपर्यवसितश्रुत ज्ञानाय नमः

३७ अपर्यवसितश्रुत ज्ञानाय नमः

३८ गमिकश्रुत ज्ञानाय नमः

३९ अगमिकश्रुत ज्ञानाय नमः

४० अङ्गप्रविष्टश्रुत ज्ञानाय नमः

४१ अनङ्गप्रविष्टश्रुत ज्ञानाय नमः

४२ अनुगामि अवधि ज्ञानाय नमः

४३ अननुगामि अवधि ज्ञानाय नमः

४४ अनुगामि वर्धमान अवधि ज्ञानाय नमः

४५ अननुगामी वर्द्धमान अवधि ज्ञानाय नमः

४६ हीयमान अवधि ज्ञानाय नमः

४७ प्रतिपाति अवधि ज्ञानाय नमः

४८ अप्रतिपाति अवधि ज्ञानाय नमः

४९ ऋजुमति मनःपर्यव ज्ञानाय नमः

५० विपुलमति मनःपर्यव ज्ञानाय नमः

५१ लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञानाय नमः

(५१ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

जगतमें ज्ञानके विना अनादि कालका (अज्ञानता) भूल नहीं मिटता। देवत्वको भूल (अज्ञान) है क्योंकि आज्ञानताके बससे कुदेवको देव तरिके मानते है, जैसे कि राग द्वेषसे भरे भुवनपति प्रभृति देवोंको ही साधारणजन मुक्ति दायक मानते है, किन्तु विचारनेकी बात है कि जो देव स्वयं मुक्ति नहीं पाता वह दूसरेको मुक्ति कैसे दे सकेगा इस लिये, जो मुक्तिको प्राप्त है और जिनमें कामक्रोध लोभ राग द्वेष मोह अज्ञान करके रहित है, वही आराधनीय देव हैं, भुवनपति प्रभृति देवोंमें ये सर्व काम क्रोधादिक दोष भरे हैं इस लिये इनको मुक्ति कहांसे हो सकती है। देव वह है जो अठारह दोषको नाश करे और दोषोको अठारह गुणको प्रगटकरे,अनंत गुणोंका आकर राग द्वेष अज्ञान

से रहित यथार्थ वादी, चौसठ इन्द्रों द्वारा पूज्य हो, वह देवाधिदेव अरिहन्त परमात्मा मुक्तिदायक देव है, ऐसी भूल (अज्ञानता) सम्यग् ज्ञानके विगर नहीं मिट सकती, वह तो देवतत्वकी भूल हुआ ॥ १ गुरुतत्त्व भूल दिखाते हैं' जो सकल जीवको हित ग्रहण करावे, शुद्ध मार्ग दिखलावे, शुद्ध प्रवृत्तिका आदर करावे, निरारम्भवृत्तिसे वर्ते, कंचनकामनिकेत्यागी पादचारी लकड़ी कि नौका समान अपने तरे दूसरोंको भी तारे सो गुरु कहाने योग्य है, और कुगुरु जो हृष्ट पुष्ट मस्त विशयाँ कषायसे आसक्त और अठारह पापस्थानका सेवन करनेवाला, कंचन कामनिके भोगि पापस्थानका उपदेश करनेवाला, पौद्गलिक स्वार्थकी बात बनानेवाला, लोहनावके समान अपने डूवते हुए दूसरोंको भी भवसमुद्र में डूवानेवाला गुरु है वह कुगुरु है। एसोंको गुरु मानना भूल है सो सम्यग् ज्ञान विना नहीं मिट सकती ।२। धर्म को भी भूल (धर्मतत्व) क्योंकि दुर्गतिमें पड़ता प्राणीको धारक, संपूर्ण जगतके जीवोंको हितकारक, जीव-दया मूल वस्तु स्वभावका निरूपक, जो होवे वह धर्म है,

किन्तु अन्य लोकोंका माना हुआ मद्यपान मांस भक्षण, पर स्त्री सेवन, पशु वध (हिंसा), कन्दमूल प्रभृति अनंतकाय भक्षण, संसारतरूका बीजरूप कन्यादान यज्ञ इत्यादि अशुद्ध क्रिया वगैरह जो धर्म है, इसको धर्म तरिके मानना बड़ी भूल है वह भूल सम्यग् ज्ञानके बिना नहीं मिटती ।२। तथा करणीय (करतव्य और अकरतव्य) अकरणीयकी भूल है जिससे अज्ञानी प्राणी आगमोक्त निर्जराके कारण जन्म मरण मिटानेका समर्थको अकरणीय कहते हैं, और जो संसार वृद्धिका पुष्ट हेतु आश्रव है उसको करणीय कहते हैं, यह भूल भी सम्यग् ज्ञानके विना नहीं मिट सकती ॥ तथा गुणकी भूल है, जो आत्मक भावका निवारण कारक और शेष आवरणी कर्मके निर्जराका कारण हो वह गुण है, किन्तु अज्ञान मनुष्य कर्मबन्धनका मुख्य हेतु शस्त्र चलाना वगैरह, भूतादि दमन, रसग्रन्थका पठन, विविध मन्त्रादिका चमत्कार दिखाना, विविध प्रकारका अवसरोचित संसारानुबन्धि (संसार बढ़ाणेवाला पापयुक्त) वचन रचना करना, हाथी, घोड़ा, व्याघ्र प्रमुखका दमन करना,

विविध औषधसे संसारिक सुख लालसाकी पूर्तिके लिये रोगादिका दमन करना, अनेक प्रकारसे राजाको प्रसन्न करना, अनेक प्रकारका स्वाङ्ग वनाना, अदृश्य पदार्थको देखना, इत्यादि कलावालेको भी गुणी कहते हैं, तो वड़ी भूल है सम्यग् ज्ञानके विना नहीं मिटती ॥ तथा हितकारकको (परोपगारी) भूल है जो अपनेको कुमार्ग से छुडावे शुद्ध मार्ग दिखावे संवरका आदर करावे, वस्तुका स्वरूप वतावे, ऐसा मुनिराज अथवा शुद्ध श्रद्धा वान् साधर्मि धर्मरूची धर्मिष्ठ, धर्मोपदेशक उसकोही हितकारक (परोपगारी) कहते हैं, लेकिन अज्ञानी लोग जो पांच आश्रवका सेवन करावे, संसार वृद्धिका कारण मिलावे, धर्मका कारण पचखान प्रभृति में अन्तराय करें, अपने स्वार्थके लिये रोवे हँसे उन्हीं के विगर को हित कहते हैं सो भूल विना सम्यग् ज्ञान के नहीं मिटती ॥ तथा जगतमें निपुण दक्ष विचक्षण वह है जो अनादि कालका विरोधि जन्म मरणादिको छेदनकी सामग्री पाकर आश्रवको त्याग करे, यथाशक्ति विरतिका आदर करे, अनर्थदण्डमें न मिले, शुभाशुभ कर्मों के उदयमें

मलिन न होवे, लेकिन अज्ञ मिथ्यात्वी लोग जो बन्ध का हेतु व्यापारादि अठारह पाप सेवन करे, शत्रुका दमन करे, गृहका निर्वाह करे, अनेक आर्त रौद्रका कारणभूत उत्साह करे, किसीको झूठे फन्देमें लगावे, उसको बड़ा स्याना अकलमन्द कहते हैं, वह भूल बिना सम्यग् ज्ञानके मिटती नहीं ॥ इस लिये जीव अनन्त गुणोंमें विशेष गुण ज्ञानका आवरणका कारण को त्याग करे, प्रत्यनिकादिकों त्याग करे, निगोदादि सूक्ष्म भावको पढ़े, सुने, पूर्वका पढ़ा हुआ स्मरण करे, भक्ष्य अभक्ष्य पेय अपेयका, जीवा जीवादि नवतत्वका, लोक स्वरूपका जड़ चेतनका, जन्म मरणका, स्वर्ग मृत्यु, पाताल का, इह लोक परलोकका, बन्ध निर्जराका, साध्य साधनका, शुद्धाशुद्ध कारणका षड् द्रव्यके उत्पाद व्ययादिका, कार्य कारणका, स्वपर विलेपनका, चतुर्गति भ्रमणका, मुक्ति प्राप्तिका, चिदानन्द स्वरूपका, रूपी अरूपी, सुख दुःख का, उपर बताई हुई संपूर्ण बातों का ज्ञान सम्यग् ज्ञानके विना नहीं होती इससे सबसे बड़ा ज्ञान सम्यग् ज्ञान है, उसके पांच भेद हैं, उन पांचोंमें

श्रुत ज्ञान मुख्य है, क्योंकि चार, ज्ञान मूक और स्वोप-कारी हैं और श्रुत ज्ञान वाचाल और स्वपरोपकारी है, अतः श्री जिनभाषित द्वादशांगी स्याद्वाद शैलीमय जो आगम है उसको निरन्तर हमारी वन्दना है, आगमोक्त करणी में हमारी श्रद्धा सदा निश्चल रहे, इनके सेवनसे हमारा जन्म सफल हो, इत्यादि प्रकारसे ज्ञान-पदकी स्तुति करे ॥

इस पदके भक्ति विषें ज्ञानीकी सेवा विनय वैयावृति करें ज्ञानी तथा पुस्तकका पूजन करें ज्ञानका उपकरण रूमाल, पूठा प्रमुख करावे, पढ़ने ... । सहाय्य करे, अन्न वस्त्र रहनेकी जगह प्रमुख ... श्रवन करे, ज्ञान भंडार करावे, ज्ञानकी ... करे, आसातनाको हटावे झूठे मुख न बोले, ... नहीं बोले, केवलज्ञान कल्याणक का उत्सव, ... रचना करावे इस प्रकारअष्ठमपदके आराधनसे ज्ञान वृद्धि अभिमत सिद्ध होता है ॥ ज्ञानपदाराधनसे जयन्त राजा तीर्थंकर हुआ ॥

॥ इति अष्टम पदाराधन विधि ॥

॥ अथ नवम पदाराधन विधि ॥ ९ ॥

(माला—)

"ॐ नमो दंसणस्स" इस पदको २० माला फेरे।

(खमासमण—)

१ तत्त्वश्रद्धानरूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
२ बहुमानादररूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
३ कुलिंगि संगवर्जन श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
४ मिथ्यादर्शनि संसर्ग वर्जनरूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
५ जिनागम श्रवण परम इच्छारूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
६ धर्मकरणे तीव्रइच्छारूपश्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
७ वैयावृत्यकरणतत्पररूपश्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः
८ श्री अरिहंत विनय करण रूप श्री सम्यग्दर्शन गुण-धराय नमः
९ श्रीसिद्धविनयकरणरूपश्रीसम्यग्दर्शनगुणधराय नमः

१० जिनप्रतिमाविनयकरणरूप श्रीसम्यग्दर्शनगुणधरायनमः

११ श्री श्रुतज्ञान विनय करण रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१२ श्री चारित्र धर्म विनय करण रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१३ श्री साधु मुनिराज विनयकरण रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१४ श्री आचार्य विनय करण रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१५ श्री उपाध्याय विनय करण रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१६ श्री प्रवचनरूपसंघ विनय करण रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१७ श्री सम्यग्दर्शन विनयकरणरूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१८ श्री मनः शुद्धि रूप सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

१९ श्री वचनशुद्धि रूप सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

२० श्री कायशुद्धिरूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
२१ शंकादूषण त्याग रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
२२ आकांक्षा दूषण त्यागरूप श्री सम्यग्दर्शनगुणधराय नमः

२३ विचिकित्सा दूषण त्याग रूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

२४ मिथ्यादृष्टि प्रशंसा वर्जनरूप श्री सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

२५ मिथ्यादृष्टिसंसर्गवर्जनरूपसम्यग्दर्शन गुणधरायनमः

२६ श्री प्रवचन प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
२७ श्री धर्म कथक प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधरायनमः
२८ श्री वादि प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
२९ श्री निमित्तक प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
३० श्री तपस्वी प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
३१ श्री विद्या प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
३२ श्री सिद्ध प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
३३ श्री कवि प्रभावक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

३४ श्री स्थैर्य भूषणधारक सम्यग्दर्श गुणधराय नमः

३५ श्री प्रभावना भूषणधारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

३६ श्रीक्रियाकुशलभूषणधारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

३७ श्री अन्तरंग भक्ति भूषणधारक सम्यग्दर्शन गुण-धराय नमः

३८ श्री तीर्थसेवाभूषणधारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

३९ श्री शम लक्षण धारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४० श्री संवेग लक्षण धारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४१ श्री निर्वेद लक्षण धारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४२ श्री अनुकम्पा लक्षण धारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

३ श्रीआस्तिक्यता लक्षणधारक सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४ अन्यदेव नमन त्याग रूप सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४५ अन्य दर्शनिगृहित जिनप्रतिमा नमन त्याग रूप सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४६ मिथ्यादर्शनिसह संलाप त्याग रूप सम्यग्दर्शन गुणधरायनमः

४७ मिथ्यादर्शनिसह आलाप त्याग रूप सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४८ मिथ्यादर्शनिनां आहारा दानत्याग रूप सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

४९ मिथ्यादर्शनिनां वारंवार आहारादिदान त्यागरूप सम्यग्दर्शन गुणधरायनमः

५० राजाभियोगेणं आगारवान् सम्यग्दर्शन गुणधरायनमः

५१ बालाभियोगेणं आगारवान् सम्यग्दर्शन गुणधरायनमः

५२ गणाभियोगेणं आगारवान् सम्मग्दर्शन गुणधरायनमः

५३ देवाभियोगेणं आगारवान् सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

५४ गुरूनिगहेणं आगारवान् सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

५५ वित्तिकांतारेणं आगारवान् सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

५६ धर्मरूप वृक्षस्य मूलभूत सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

५७ मोक्षरूप नगरस्य द्वारभूत सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः

५८ धर्मरूप वाहनस्य पीठभूत सम्यग्दर्शन गुणधरायनमः
५६ विनयादि गुणस्य आधारभूत सम्यग्दर्शन गुण-
धराय नमः
६० धर्मरूप अमृतस्यपात्रभूत सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
६१ रत्नत्रयिणां निधानभूत सम्यग्दर्शन गुणधराय नमः
६२ अस्ति आत्मा इति निर्णयरूप सम्यग्दर्शन गुण-
धराय नमः
६३ नित्यानित्य आत्मा इति निर्णयरूप सम्यग्दर्शन
गुणधराय नमः
६४ जीवःकर्मणः कर्त्ता इति निर्णयरूप सम्यग्दर्शन
गुणधराय नमः
६५ जीवः कर्मणो भोक्ता इति निर्णयरूप सम्यग्दर्शन
गुणधराय नमः
६६ अस्ति जीवस्य मोक्षः इति निर्णयरूप सम्यग्दर्शन
गुणधराय नमः
६७ मोक्षस्य अस्ति उपायः इति निर्णयरूप सम्यग्दर्शन
गुणधराय नमः

(६७ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

जगतमें सब साधक जीवों को अपने साध्यके सिद्ध करनेमें श्री दर्शन गुण ही उपकारी है। सम्यक् दर्शन बिना कोई भी साधन सिद्धिदायक नहीं हैं। सोर्द्ध नवपूर्व पर्यन्त श्रुतपाठी हो लेकिन दर्शन न हो तो वह अज्ञानी, और सामान्य नवकार आवश्यक, मात्र श्रुतधारीको यदि दर्शन प्राप्त न हो तो वह ज्ञानी है। दर्शनके विना साधु श्रावकको सर्व क्रिया द्रव्यही कही जाती है। बिना दर्शन कितना भी कष्ट तप करे किन्तु सकाम निर्जरा नहीं होती ; बिना दर्शन साधु आराधक नहीं कहा जाता। यदि अन्तर्मुहूर्त मात्र दर्शन गुण हो तो अर्द्ध पुद्गलपरावर्तके भीतर भवभ्रमण रहे किन्तु याद न हो। वह दर्शन गुण तीन प्रकोरका है, मिथ्यात्व, मोहनी कर्मके उपशम करे तो उपशमकी प्राप्ति होती है। तथा देही जब मिथ्यात्व मोहनीकर्मका कुछ क्षय करे, कुछ उपसम करे तो क्षयोपशम समकित प्राप्त

होता है, समकित रत्नत्रयोके मध्य सकल धर्मका बीजभूत ज्ञान, चारित्र उपर दल थल फूल प्रमुख है। मोक्षार्थी जीवोंको दर्शन समान कोई लाभ नहीं है। जगतमें संसारी जीवोंको सब सुलभ है, लेकिन जिस प्रकार अकालमें खीर खांडका भोजन, समुद्रमें डूबतेकों नावकी प्राप्ति दुर्लभ है, वैसेही समकितकी प्राप्ति दुर्लभ है, अतुल भाग्यके उदयसे समकितका लाभ होता है, दर्शन के समान कोई रत्न नहीं है, तथा दर्शनके समान कोई बान्धव हितकारक नहीं है, दर्शनके समान दूसरा धर्म साधनमें तत्व नहीं है, तीर्थंकर प्रमुख अनेक ऋद्धि पाने का हेतु एक दर्शनही है, इस हेतुसे देवऋद्धि नरेन्द्रऋद्धि धनधान्यकोप कोष्ठागार, विविध कामभोगविलास प्रमुख पौद्गलिक सुखकी चाहना मैं नहीं करूं, किन्तु एक श्रीजिनाज्ञा प्रमाण बोधबीज प्राप्ति जन्म जन्मान्तरमें सुलभ होवे यही हमारी प्रार्थना है। प्रतिक्षण दर्शन गुणधारीको और दर्शन गुणको हमारी वन्दना हो, हमारा दर्शनाराधन सफल हो ॥

इत्यादि प्रकारसे स्तवन करे और पारणाके दिन

अथवा उसी दिन पूजा करे करावे, संघभक्ति स्वामी वात्सल्य करे, शासनोन्नति, रथयात्रा, पंच कल्याणक महोत्सव, अष्टविधान, प्रासादपर ध्वजारोपण, अमारी पटह घोषण, अन्न वस्त्र दान, अजीवकका सहाय्य करण इत्यादि विधि यथासम्भव करे तथा निरतिचार सम्यक्त्व का पालन करे, और अदर्शनका संसर्ग परित्याग करे, सर्व जीवोंसे मैत्री राखे, कषाय प्रबलता मिटावे, सब सुख दुःखकों औदयिक भावकर्मोदय माने, गुणघातीकषाय सर्वथा न राखे। अनुक्षण दर्शनशुद्धि विचारें, धर्माचार्य की विविध भक्ति करे, सर्वमें गुण ग्रहण करे, दोषको चित्तसे निकाले, अपना अनादि कालका भूल मिटा नहीं, ऐसा अपनेमें दोष विचारे, जिनोक्त सूक्ष्मभाव सच्चा है ऐसी श्रद्धा करे, रुचिवाले जीवको दर्शन प्राप्ति करावे, पढ़नेवालेको पढ़नेमें स्थिर करावे इत्यादि प्रकारसे इस पदका आराधन करे, दर्शन पदाराधनसे हरिविक्रम जिन हुआ.

॥ इति नवम पदाराधन विधि ॥

॥ अथ दशमे पदाराधन विधि ॥१०॥

(माला—)

"ॐनमोविनयगुण संपण्णाणं"

इसपद की २० माला फेरे ।

(खमासमण—)

१ तीर्थङ्कर अनासातनारूप विनयगुण संपन्नाय नमः
२ तीर्थङ्कर भक्ति करणरूप वि० सं० नमः
३ तीर्थङ्कर बहुमान करणरूप वि० सं० नमः
४ तीर्थङ्कर स्तुति करणरूप वि० सं० नमः
५ सिद्ध अनासातनारूप वि० सं० नमः
६ सिद्ध भक्ति करणरूप वि० सं० नमः
७ सिद्ध बहुमान करणरूप वि० सं० नमः
८ सिद्ध स्तुति करणरूप वि० सं० नमः
९ सुविहित चन्द्रादि कूलानाशातना रूप वि० सं० नमः
१० सुविहित चन्द्रादि कूल भक्ति करण रूप वि० सं० नमः
११ सुविहितचन्द्रादि कूल बहुमानकरण रूप वि० सं० नमः
१२ सुविहित चन्द्रादिकूल संस्तुतिकरणरूप वि० सं० नमः

१३ कोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित श्री मुनि अनासा-
तना करण रूप वि० सं० नमः

१४ कोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित मुनि भक्ति करण
रूप वि० सं० नमः

१५ कोटिकादि गणोत्पन्नसुविहित मुनि संस्तुति करण
रूप वि० सं० नमः

१६ कोटिकादि गणोत्पन्न सुविहित मुनिबहुमानकरण
रूप वि० सं० नमः

१७ चतुर्विध संघ अनासातना रूप वि० सं० नमः

१८ चतुर्विध संघ भक्ति करण रूप वि० सं० नमः

१९ चतुर्विध संघ बहुमान करण रूप वि० सं० नमः

२० चतुर्विध संघ स्तुति करण रूप वि० सं० नमः

२१ शुद्धागमोक्त क्रियाकारकस्य अनाशातना रूप वि०
सं० नमः

२२ शुद्धागमोक्त क्रियाकारकस्य भक्ति करण रूप वि०
सं० नमः

२३ शुद्धागमोक्त क्रियाकारकस्य बहुमान करण रूप वि०
सं० नमः

२४ शुद्धागमोक्त क्रियाकारकस्य स्तुति करण रूप वि०
सं० नमः
२५ श्री जिनोक्त धर्म अनासातना रूप वि० सं० नमः
२६ श्री जिनोक्त धर्म भक्ति करण निपुणरूप वि० सं० नमः
२७ श्री जिनोक्त धर्म बहुमान करण रूप वि० सं० नमः
२८ श्री जिनोक्त धर्मस्य स्तुति करण रूप वि० सं० नमः
२९ ज्ञानस्य अनाशातना रूप वि० सं० नमः
३० ज्ञानस्य भक्ति करण रूप वि० सं० नमः
३१ ज्ञानस्य बहुमान करण रूप वि० सं० नमः
३२ ज्ञानस्य स्तुति करण रूप वि० सं० नमः
३३ ज्ञानिजनस्य अनाशातना रूप वि० सं० नमः
३४ ज्ञानिजनस्य भक्ति करण रूप वि० सं० नमः
३५ ज्ञानिजनस्य बहुमान करणरूप वि० सं० नमः
३६ ज्ञानिजनस्य स्तुति करण रूप वि० सं० नमः
३७ श्रीमदाचार्यस्य अनाशातना रूप वि० सं० नमः
३८ श्रीमदाचार्यस्य भक्ति करण रूप वि० सं० नमः
३९ श्रीमदाचार्यस्य बहुमान करण रूप वि० सं० नमः
४० श्रीमदाचार्यस्य स्तुति करण रूप वि० सं० नमः

४१ स्थविरस्य अनाशातना रूप वि० सं० नमः

४२ स्थविरस्य भक्ति करण रूप वि० सं० नमः

४३ स्थविरस्य बहुमान करण रूप वि० सं० नमः

४४ स्थविरस्य स्तुति करण रूप वि० सं० नमः

४५ श्रीमदुपाध्यायस्य अनाशातना रूप वि० सं० नमः

४६ श्रीमदुपाध्यायस्य भक्ति करण रूप वि० सं० नमः

४७ श्रीमदुपाध्यायस्य बहुमान करण वि० सं० नमः

४८ श्रीमदुपाध्यायस्य संस्तुति करण रूप वि० सं० नमः

४९ श्रीगणावच्छेदकस्य अनाशातना करणरूप वि०सं०नमः

५० श्रीगणावच्छेदकस्य भक्ति करण रूप वि० सं० नमः

५१ श्रीगणावच्छेदकस्य बहुमान करण रूप वि० सं० नमः

५२ श्रीगणावच्छेदकस्य स्तुति करण रूप वि० सं० नमः

(५२ लोगस्सका काउस्सग करे)

स्तुति—

विनयसे अष्टविधकर्म का नाश होता है, क्योंकि जिनागममें कहा है कि सर्व धर्मका मूल विनय है, और विनयका फल सुश्रुषा, सुश्रुषाका फल श्रमण, और श्रमणका

फल ज्ञान, ज्ञानका फल विरति, विरतिका फल आश्रव, आश्रवका संवर, संवरका फल तप होता है, और तपका फल निर्जरा, उसका फल क्रियानिवृत्ति, उसका फल अयोगित्व, अयोगीपनेका फल भवसंततिक्षय, भव-संततिक्षयका फल मुक्ति है, इस लिये सर्व कल्याणका भाजन विनय है, जैसे वृक्षका मूल दृढ़ सरस होनेसे स्कन्ध, शाखा, प्रशाखा, दल, पुष्प, फल प्रमुख सब सुलभ होता है, वैसे ही विनय गुणवाला पृच्छक प्राणी श्रुत शीलका तत्वको प्राप्त होता है, पापका नाश करता है, और सिद्धको प्राप्त होता है। जैसे सुवर्ण में नरमी बहुत है, नमानेसे नम जाता है। कालिमा नहीं है, अग्निमें तपानेसे अधिक उज्वल होता है, इसीसे सातों धातु में सुवर्ण अधिकश्रेष्ठ कहाजाता है, और पवित्र मानाजाता है, वैसे ही विनय सब गुणोंमें श्रेष्ठ है, विनयगुणसंपन्न प्राणी मान, जय, मृदुताको प्राप्त होता है, मिथ्यात्वका कठिन हटको परित्याग करता है, कृष्ण-लेश्यारूप कालिमा नहीं रहती, और सबसे अधिक माननीय होता है, इससे मोक्षार्थी प्राणीको विनय शैली

पाये विना किसी गुणकी प्राप्ति नहीं होती, विनय गुण लौकिक लोकोत्तर भेदसे दो प्रकारका है, लौकिक विनयसे इह लोक में सब सानुकूल रहते हैं, और यश कीर्ति होती है, सज्जन कहलाता है, लोकोत्तर विनयसे प्राणी इह लोक परलोकमें परम सुखका भाजन होता है, और इह लोकमें विराधक भावमें साधकताको प्राप्त होता है, श्री संघमें प्रसंशनीय आचार्य्य उपाध्यायादि पदवीको पाता है, श्री संघमें मुख्य होता है, चतुर्विध संघका मान्य पूज्य होता है, परभवमें सकल कर्मका नाश करता है, सादि अनन्त भागे कल्याणका अनुभव करता है, इस लिये अरिहन्तादि १३ पदका विनय करना हमारा परम साधन है, हमारा मनोरथ वृक्षका अवन्ध्यबीज है, मेरेको जन्मजन्ममें अरिहन्तपदका विनय प्राप्त हो यही हमारी आन्तरिक प्रार्थना है ।

इत्यादि प्रकारसे स्तुति करके यथाशक्ति अरिहन्त पूजा करे, मन्दिर बनवावे मन्दिरका कचरा निकाले, वासन मांजे, विनय पूर्वक उत्तम द्रव्य से प्रतिमाजीको

साफ करे, पुस्तकें लिखावे, पहलेके लिखे पुस्तकोंका संरक्षण करे, करावे, पढ़े, पढ़ावे, आवश्यकादि क्रिया विधि बहुमान से करे, क्रियाका फल औरोंसे कहे, दूसरों को क्रिया सिखलावे, स्थविरतर साधुको विनयसे औषध प्रमुखका निमन्त्रण करे, प्रसंशा करे, बहुमान विनयसे संघभक्ति स्वामीवत्सल करे, इस प्रकार दशम पदका आराधन करे ॥ विनयपद आराधनसे धन्नो मोक्ष गया।

॥ इति दशम पदाराधन विधि ॥

अथ एकादश पदाराधन विधि॥११॥

(माला—)

"ॐ नमो चारित्तस्स:" इस पदकी २० माला फेरे।

(खमासमण—)

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमणव्रत धराय श्री चारित्राय नमः
२ सर्वतः मृषावाद विरमणव्रत धराय श्री चा० नमः
३ सर्वतः अदत्तादान विरमणव्रत श्री चा० नमः
४ सर्वतः मैथुन विरमणव्रत श्री चा० नमः
५ सर्वतः परिग्रह विरमणव्रत श्री चा० नमः
६ सम्यक् क्षमा गुणधराय श्री चा० नमः
७ सम्यग् मार्दव गुणधराय श्री चा० नमः
८ सम्यगार्ज्जव गुणधराय श्री चा० नमः
९ सम्यग् मुक्ति गुणधराय श्री चा० नमः
१० सम्यग् तपो गुणधराय श्री चा० नमः

११ सम्यक् संयम गुणधराय श्री चा० नमः
१२ सम्यग् बोध दर्शन गुणधराय श्री चा० नमः
१३ सम्यग् सत्य गुणधराय श्री चा० नमः
१४ सम्यग् सौभ्य गुणधराय श्री चा० नमः
१५ सम्यग् किंचित गुणधराय श्री चा० नमः
१६ सम्यग् ब्रह्मचर्य गुणधराय श्री चा० नमः
१७ विगत प्राणातिपाताश्रवाय गुणवते नमः
१८ विगत मृषावादाश्रवाय गुणवते नमः
१९ विगत अदत्तादानाश्रवाय गुणवते नमः
२० विगत मैथुनाश्रवाय गुणवते नमः
२१ विगत परिग्रहाश्रवाय गुणवते नमः
२२ श्रोत्रेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्र गुणवते नमः
२३ घ्राणेन्द्रिय विषय वि० गुणवते नमः
२४ चक्षुरिन्द्रिय विषय वि० गुणवते नमः
२५ रसनेन्द्रिय विषय वि० गुणवते नमः
२६ त्वगिन्द्रिय विषय वि० गुणवते नमः
२७ विजित क्रोधाय चारित्र गुणवते नमः
२८ विजित मान दोषाय चारित्र गुणवते नमः

२९ विजित माया दोषाय चा० गुणवते नमः

३० विजित लोभ दोषाय चा० गुणवते नमः

३१ मनोदण्ड रहिताय चा० गुणवते नमः

३२ वचनदण्ड रहिताय चा० गुणवते नमः

३३ कायादण्ड रहिताय चा० गुणवते नमः

३४ वसति शुद्ध ब्रह्मवृतयुक्ताय चा० गुणवते नमः

३५ स्त्रीभिः सह रत वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय चा० गु० नमः

३६ स्त्री सेवितासन वर्जन ब्रह्मवृत युक्ताय चा०गु०नमः

३७ स्त्री रूपानवलोकन ब्रह्मवृत युक्ताय चा० गु०नमः

३८ कुड्यन्तरित स्त्रीपुरुष संयुत वसतिशयन वर्जन ब्रह्मवृत युक्ताय चा० गु० नमः

३९ पूर्वक्रीडित क्रीडास्मरण वर्जन ब्रह्म०चा० गु०नमः

४० अतिमात्राहार वर्जन ब्रह्म चा० गु० नमः

४१ सरसाहार वर्जन ब्रह्म० चा० गु० नमः

४२ विभूषणादिना शरीरशोभा वर्जन ब्रह्म० चा० गु० नमः

४३ आचार्य वैयावृत्तिकरण रुप चारित्र गुणाय नमः

४४ उपाध्याय वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

४५ तपस्वि वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

४६ शिष्य वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

४७ ग्लान वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

४८ साधु वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

४९ साध्वी वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

५० संघ वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

५१ कूल वैयावृत्ति करण रुप चा० गु० नमः

५२ गण वैयावृत्तिकरण रुप चा० गु० नमः

५३ सम्यक् ज्ञानगुण युक्ताय चारित्राय नमः

५४ सम्यक् दर्शन सहिताय चारित्राय नमः

५५ सम्यग् चारित्र गुणयुक्ताय नमः

५६ अनसन तप युक्ताय चारित्राय गु० नमः

५७ सम्यगूनोदर तप युक्ताय चा० गु० नमः

५८ सम्यग्वृत्ति संक्षेप तप युक्ताय चा० गु० नमः

५९ सम्यग् रसत्याग तप युक्ताय चा० गु० नमः

६० सम्यक् कायक्लेश तप युक्ताय चा० गु० नमः

६१ सम्यक् संलीनता तप युक्ताय चा० गु० नमः
६२ प्रायश्चित्ताभ्यन्तर तप युक्ताय चा० गु० नमः
६३ विनयाभ्यन्तर तप युक्ताय चा० गु० नमः
६४ वैयावृत्ति तप युक्ताय चा० गु० नमः
६५ स्वाध्याय अभ्यंतर तप युक्ताय चा० गु० नमः
६६ शुभ ध्यानतप कायोत्सर्ग तप चारित्र गु० नमः
६७ क्रोधजय चारित्र गुणाय नमः
६८ मानजय चा० गु० नमः
६९ मायाजय चा० गु० नमः
७० लोभजय चा० गु० नमः

(७० लोगस्सका काउस्सग्ग करे)

स्तुति—

सच्चिदानन्द पदका मुख्य कारण अनन्त चारित्र गुण है, चक्रवर्ति प्रमुख पदवी चारित्रके पालनेसे आमोसही विप्पोसही प्रमुख अनेक लब्धि उत्पन्न होती हैं, चारित्र ज्ञानानन्द स्वरूप परम अनुभव स्वरूप है, वर्ष पर्यन्त शुद्ध चारित्री अनुत्तर देवताके सुखको अतिक्रमण करता है,

चारित्रीको राजभय चोरभय नहीं होता, चारित्री सर्वका हितकारी जगद्वन्द्य होता है, परलोकमें स्वर्ग अथवा मुक्ति को पाता है, चक्रवर्त्ती प्रभृति भी चारित्रके रहस्यको समझकर छ खण्डके प्रभुताको तृणवत् परित्याग करके बड़े उत्साहसे चारित्र अङ्गीकार करता है, जिससे देवेन्द्र नरेन्द्र को भी पूजनीय होता है, एक दिन भी शुद्ध चारित्र पा ले तो मुक्ति होती है, कदाचित मुक्ति न हो तो भी वैमानिक देव तो अवश्य होता ही है। आठ कर्मका जो अनादि परम्परा संचित है उसको नाश करता है, ऐसा चारित्र यथार्थ है, विना चारित्र कोई मुक्ति नहीं पाता, ऐसा सर्वश्रेष्ठ चारित्र धर्म जिसदिन प्राप्त हो वह दिन हमारा सफल और धन्य है, जिन्होंने चारित्र धर्म पाया है वही हमारे पूज्य हैं, ऐसे चारित्र गुणको नित्य हमारी वन्दना है। इस प्रकारसे स्तुति करे। पारणाके दिन मुनिको प्रतिलाभ करावे। यथा शक्ति श्रावकोंको भोजन करावे, अमारीका पटह वजावे, चारित्रका उपकरण ओघा, मुंह पत्ती, पात्रा, कांबल, दांडा, संथारा, आसन प्रमुख साधु योग्य, और चरवला मुंहपत्ती प्रभृति श्रावक योग्य

बनावे, दीक्षाका महोत्सव करे, दीक्षा कल्याणकका महोत्सव करे, छ कायाको (जयणा) करे, औरोंको भी चारित्र गुणका प्रेमी बनावे, चारित्र पदाराधनसे वरुणदेव जीनवर हुए ॥

॥ इति एकादश पदाराधन विधि ॥

अथ द्वादश पदाराधन विधि ॥१२॥

(माला)

" ॐ नमो बंभय धारिणां" इस पदकी २० माला फेरे।

(खमासमण—)

१ मनसा औदारिक विषय अकरणरूप ब्रह्मचर्य धराय नमः ॥
२ मनसा औदारिक विषय अकारणरूप ब्र० नमः
३ मनसा औदारिक विषय अननुमोदनरूप ब्र० नमः
४ वचसा औदारिक विषय अकारण रूप ब्र० नमः
५ वचसा औदारिक विषय अकारणरूप ब्र० नमः

६ वचसा औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्र० नमः
७ कायेन औदारिक विषय अकारण रूप ब्र० नमः
८ कायेन औदारिक विषय अकारण रूप ब्र० नमः
६ कायेन औदारिक विषय अननुमोदन रूप ब्र० नमः
१० मनसा वैक्रिय अकारण रूप ब्र० नमः
११ मनसा वैक्रिय विषय अकारण रूप ब्र० नमः
१२ मनसो वैक्रियविषय अननुमोदन रूप ब्र० नमः
१३ वचसा वैक्रिय विषय अकारण रूप ,,
१४ वचसा वैक्रिय विषय अकारण रूप ,,
१५ वचसा वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप,'
१६ कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ,,
१७ कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप ,,
१८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्मचर्य
धराय नमः ॥

(१८ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

सर्व व्रतोंमें ब्रह्मचर्य वड़ा है। ब्रह्मचर्य के रक्षा का नववाड प्ररूपण किया है, और व्रतोंके भंगसे एकही व्रत

भंग होता है, परतु ब्रह्मचर्यके भंगसे पांचो व्रतका भंग होता है, जिसने चतुर्थ व्रत पालन किया उन्होंने पांचो वृत पालन किया। समुद्रके समान यह ब्रह्मव्रत है, और दुसरे वृत छोटी २ नदियोंके समान है, यदि ब्रह्मचर्यमें दृढ होवेतो देवता, दानव, यक्ष, राक्षस प्रमुख सर्व कोई नमस्कार करें। देवतामें सब शक्ति रहने परभी ब्रह्मचर्य पालन की शक्ति नहीं है, ब्रह्मचारी आप उज्वल रखता है ब्रह्मचारी यदि मन्त्र विद्या साधन करे तो शीघ्र ही सिद्धि होवे, नारदके समान कलहकारी केवल ब्रह्मव्रत से ही तरता है, आगममें भी ब्रह्मवृतको ३२ बडी उपमा दी है,—

जैसे पर्वतोंमें मेरु है, धेनुओमें कामधेनु है, वृक्षोंमें कल्पवृक्ष है, रत्नोंमें चिन्तामणिरत्न है, समुद्रोंमें क्षीरसागर है, लताओंमें चित्रावल्ली है, वश्यार्थमें मोहनवेली है, धातुओंमें सुवर्ण है, हाथियोंमें ऐरावण है, देवोमें वीतराग है, सुरगणोंमें इन्द्र है, वैसे वृतोंमें ब्रह्मव्रत बडा है, ऐसी उपमा जिनराजने स्वयं दी है,

चारित्रका मूल ब्रह्मचर्य है, समकित वृद्धि का कारण ब्रह्मचर्य है, और वृत उत्सर्ग अपवाद रूप है, और ब्रह्मव्रत केवल उत्सर्गही है, इस कारणसे दुष्करकारी शुद्ध ब्रह्मचारीकों प्रतिक्षण हमारी वन्दना रहे, और उक्तस्वरूप ब्रह्मवृतको हमभी पालन करे, इस प्रकार स्तवन भावना करे ॥ और पारणाके दिन ब्रह्मचारीकी, चतुर्विध संघकी भक्ति करे, स्वामी वत्सल यथाशक्ति करे, इस पदके ओली पर्यन्त ब्रह्मचर्य नव वाड विशुद्ध पालन करे, अठारह हज़ार शीलांग-रथकी गाथाका शिक्षा करे, औरोंको भी शील पालन करावे, ऐसे करनेसे संसार समुद्र-को प्राणी अनायास-तरे ॥ ब्रह्मचर्य पदके आराधनसे चन्द्रवर्मा जिन हुआ ॥

॥ इति द्वादश पदाराधन विधि ॥

———

अथ त्रयोदश पदाराधन विधि ॥१३॥

(माला—)

"ॐ नमो किरियाणं" इस पदकी २० माला फेरे।

(खमासमण—)

१ अशुद्ध कायिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः ॥

२ अधिकरणिका क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

३ परितापिका क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

४ प्राणान्तिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गु० नमः

५ आरम्भिका क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

६ परिग्रह क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

७ माया प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गु० नमः

८ मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

९ अपच्चक्खाणी प्रवर्तन रहिताय गु० नमः

१० दृष्टिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

११ स्पर्शन क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१२ प्रातित्यकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१३ सामन्तोपनिपातनिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१४ नैशस्त्रिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१५ स्वहस्तिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१६ आणवणी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१७ विदारणिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१८ अनाभोगप्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

१९ आणवकप्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

२० आज्ञापन प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

२१ प्रयोग क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

२२ समुदाण क्रिया प्रवर्तन रहिताय गु० नमः

२३ प्रेम क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

२४ द्वेष क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

२५ इरियावहि क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणव्रते नमः

(२५ लोस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

जैसे जगत में सम्यक क्रिया निर्जरा का हेतु है, श्री जिनेन्द्रशासन की स्थिति क्रियारूप से रही है, सकल शुद्ध व्यवहार क्रियात्मक है, स्याद्वाद मार्ग की क्रिया मोक्ष का मुख्य हेतु है, सम्यग् ज्ञान क्रियामय है, सम्यग् ज्ञान दर्शन से शुद्ध क्रिया शोभती है, असंख्यात जो मुक्ति के कारण कहे हैं वे सब क्रिया के भेद से है, अनेक गति के (प्रकाश) तप भी क्रिया भेद से है, सम्यग्क्रिया कहे तो अक्रिय पदको पावें, सम्यग् ज्ञानी शस्त्र सुभट रूप है, जैसे बड़ा बलवान भी सुभट्ट बिना शस्त्र का शत्रु को नहीं जीत सक्ता, वैसे सम्यग् क्रिया के बिना प्राणी कर्म का क्षय नहीं कर सक्ता, (ज्ञान क्रियाम्यां मोक्षः) इस आगमसे क्रियारुचि जीव अल्पसंसारी कहा है, मिथ्यादृष्टि

भी केवल सम्यग् क्रिया करे जो नवम ग्रैवेयक तक जाता है, शुद्ध श्रद्धावाले धर्म प्रिय जो जीव 'क्रियाके विषे बहु आदर वाले हैं, वह धर्मको इष्ट समझकर क्रिया करते हैं, सो भावधर्म कहते हैं। प्रभुके आज्ञारूप दान, शील तप भावना रूप मुक्ति का मुख्य साधन जिस समय सम्यग् क्रिया की जाय वह हमारा सम्बल रूप है, धर्म प्राप्तिका अवंध्य बीज है, इससे सम्यग्ज्ञान क्रिया वालेको प्रतिक्षण हमारी वन्दना है ॥

इत्यादि प्रकारसे स्तुति करके स्थिर चित्त से यदि उस दिन पोषध बने तो बहुत उत्तम, नहीं तो पांच सात सामायिक करे, सावद्य क्रिया न करे, न करावे मन, वचन कायको गुप्त रखे, पारणेमें मुनिओंको दान दे, उपधान प्रमुख क्रियाका उत्सव करे, आवश्यकादि क्रिया का आदर करे करावे। आदर किएको साहाय्य करे। घरमें शुभ क्रिया करे, ऐसे करनेसे मनुष्य को अभिमत फल प्राप्त हो ॥ क्रिया पदके आराधनसे हरिवाहन तीर्थंकर हुआ ॥

इति त्रियोदश पदाराधन विधि ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश पदाराधन विधि ॥१४॥

—:※:—

(माला—)

"ॐनमो तवस्स" इस पदकी २० माला गिने।

(खमासमण—)

१ अनसनाभिध तपोयुक्ताय नमः

२ उनोदरि तपोयुक्ताय नमः

३ वृत्तिसंक्षेप तपो युक्ताय नमः

४ रसत्यागरूप तपो युक्ताय नमः

५ कायक्लेश तपो युक्ताय नमः

६ संलीनता तपो युक्ताय नमः

७ प्रायश्चित तपो युक्ताय नमः

८ विनय रूप तपो युक्ताय नमः

९ वैयावृत्तिरूप तपो युक्ताय नमः

१० सद्भावकरणरूप तपो युक्ताय नमः

११ ध्यानरूप तपो युक्ताय नमः

१२ कायोत्सर्ग तपो युक्ताय नमः

(१२ लोगस्सका काउस्सग करे)

स्तुति—

जैसे सम्यग तप, कठिन कर्म रूप जंजीरे तोड़नेके लिए वज्रका मुद्गर है, अति कठिन निकाचित् कर्मफल देकर छूटता है, अथवा सम्यग् तपसे छूटता है, अनन्त बलवान् शासनाधीश सकल विज्ञान भास्कर सुरासुर सेवित चरणारविन्द निश्चय चरम शरीरी परमेश्वर भी कठिनतर तप करके कर्मको छेदन किए।

तपसे विचित्र लब्धि, अष्टमहा सिद्धि प्राप्त होती है, चक्रवर्ती प्रमुख पदवी तपका फल है, तपस्वीका वचन निष्फल नहीं होता, चारित्री तपोधन कहे जाते हैं, दृढ़ प्रहारी, चिलाती पुत्र काल कुमारादि १० महा पाप कर्ता तपके बलसे थोड़ कालमें केवल ज्ञान पाकर संसारसे तर गए, इच्छानिरोध करके क्षमायुक्त तप करे तो साधकको कोई पदवी दुष्कर नहीं है, तपस्वी मुनि शासनका दीपक समानका दीपक समान है, सर्व दर्शनिकको वन्दनीय होता है, तपस्वीसे मिथ्यात्वभी डरते रहै, आसातना नहीं

कर सके, शासनका उच्छेद करनेको नमुचि नामका दुष्ट मिथ्यात्वी उद्धत था, उसको विष्णुकुमारने शिक्षा देकर शासनकी स्थिर शोभा किया, अष्टम तप प्रभावसे देवता आप खड़ा रहें, जो कहे सो कार्य करता है, नागकेतुको अष्टम तपके प्रभावसे धरणेन्द्र आकर स्वयं रक्षा किया, तपस्वी मुनि शासन में बड़े महान हैं, उन्हींसे गच्छ की शोभा है, इस कारण मुक्तिका परम अवन्ध्य कारण परम मङ्गल रूप तपपद को हमारी सदा वन्दना है। इस प्रकार से तपपद की स्तुति करके उसी दिन अपना कार्य सहन रूप कायक्लेशादि तपका आदर करे, पारणा में आँबिल आदि तपका अभिग्रह धारण करे, तपके दिन कषाय न करे , कषाय का त्याग ही भाव तप है, बारह मोदक से मुनिको प्रतिलाभ करावे, पीछे तपस्वी श्रावक यथायोग्य आदिकी भक्तिकरे, शीतातपसे तपस्वीको सहाय्य करे, कनकावली, रत्नावली, मुक्तावली, हिंसहक्रीडन प्रमुख तप करे, इस प्रकार तप पदका आराधन करे। तपपदके आराधनसे कनककेतु तीर्थंकर हुआ ॥

॥ इति चतुर्दश पदाराधन विधि ॥

॥ अथ पञ्चदश पदाराधन विधि ॥१५॥

(माला—)

"ॐ नमो गोयमस्स" इस पदकी २० माला फेरे,

(खमासमण—)

१ श्री गौतम गणधराय नमः

२ श्री अग्निभूति गणधराय नमः

३ श्री वायुभूति गणधराय नमः

४ व्यक्तस्वामि गणधराय नमः

५ श्री सुधर्मा स्वामि गणधराय नमः

६ श्री मण्डितस्वामि गणधराय नमः

७ श्री मौर्यपुत्रस्वामि गणधराय नमः

८ श्री अकम्पितस्वामि गणधराय नमः

९ श्री अचलभ्राता गणधराय नमः

१० श्री मेतार्यस्वामि गणधराय नमः

११ श्री प्रभासस्वामि गणधराय नमः

१२ चतुर्विंशति तीर्थङ्कराणांद्विपञ्चादशधिक चतुर्दश

शत १४५२ गणधरेभ्यो नमः

(१२ लोगस्स का काउसग्ग करे)

स्तुति—

सूत्रनिबद्ध गणधर नामकर्म विशेषप्राणी तीर्थङ्करके प्रथम देशना में प्रभुके मुखसे उपदेश श्रवण करके परम वैराग्यसे उल्लसित चित्त होकर श्री जिनेश्वरजी के हाथसे दीक्षा ग्रहण किया, और परमेश्वर को तीनवार प्रदक्षिणा करके खमासणा देकर कहे कि हे भगवन् हे इच्छाकारिन् वाचना प्रसाद किजिए, ऐसा परमेश्वर से वाचना मांगे और उसी समय इन्द्र वज्रमणि के स्थाली में चन्दन आदि ५२ सुगन्धित द्रव्य चूर्ण भरकर निकट खड़ा रहे तब परमेश्वर सिंहासनसे कुछ उठाकर स्थालीमें से चूर्ण उठाकर मुख्य गणधरके शिर पर डाला, (उपन्नेवा) उच्चारण करता हुआ और गणधरों के शिरपरभी वासक्षेप डाला, तब गणधरोंकी लब्धि प्रगट हुई,सब गणधरों की दृष्टिमें जितने जीव पदार्थ की उत्पत्तिहै सो सब देखनेमेंआती है तब गणधर विचार करताहै कि यह अनन्त उत्पाद कहाँ प्रवेश करेगा, तबफिर खमासणा पूर्वकप्रद

क्षिणा करके वाचना मांगताहै तोफिर प्रभुजी पूर्ववत् (विधनेत्रा) इस पदको उच्चारण करता हुआ वासक्षेप डालते हैं, तब गणधरों को विनाशको प्राप्त होतीहुई चीजें देखने में आती है, जोउत्पन्नहोता है सो विनष्ट होताहै,इस प्रकार प्रतिसमय विनाश देखकर विचारताहैकिजब ऐसे अनन्त विनाश होरहाहै तब क्या रहेगा, फिरपूर्वोक्त प्रकारसे वांचना मांगताहै,और प्रभुजी पूर्ववत् (ध्रुवेषा) ऐसा उच्चारण करके वासक्षेप गणधरों के शिरपर डालते हैं, तो गणधरों के दृष्टि में ये पदार्थ भापते हैं, और एक नवीन पर्याय उत्पन्न होता हैं और पूर्व पर्यायका नाश होता है, इस प्रकार वस्तुका उत्पाद, व्यय ध्रौव्यका ज्ञान रूप त्रिपदीको पाकर गण-धर द्वादशांगीकी रचना करता है उसमें ५ अधिकार हैं सो सब सूत्रसे रचना करता है बारहवां अंग दृष्टि वाद हैं सो संपूर्ण गणधर लब्धिवन्तको होता है, चौदह पूर्व जिसका एकदेश है एसे गणधर भगवान् चार ज्ञान अनेक लब्धि संपन्न तीर्थङ्करकी उपमाको पाता है, शासन व्यव-हारकी स्थापना श्री गणधर कृत होती है।

इससे चौबीस तीर्थङ्करों के १४५२ गणधरोंको हमारी

नित्य त्रिकाल वन्दना है ॥ इस प्रकार गणधर की स्तुति करके पीछे पात्र, महापात्र, मध्यम पात्र, जघन्य पात्र, का विचार करे । तीर्थंकर गणधर रत्नपात्र तुल्य, सामान्य साधु कंचन पात्र, व्रिति श्रावक चांदि के पात्र, समकिती श्रावक तांबे के पात्र, अवृति मिथ्या दृष्टि तांबा-सरि के पात्र तुल्य है अतः मिथ्यादृष्टि को हजार लाख देनेका जो फल होता है सो एक देशविरति श्रावक के भोजन करानेसे होता है, और हजार देश विरतिके देनेसे जो फल होता है सो एक महाव्रती साधुको दान देनेसे फल होता है । हजार साधुको दानका फल विचारकर गौतम छटके पारणे बड़े भावसे साधुको खीर खाँड़का भोजन दे आचार्यको औषध वस्त्रादि देवे, गणधर की मूर्ति बनवावे तथा जिनेश्वरके आगे २४ नारियल रखे, १४५२ सुपारी आदि फल रखे इस तरहसे पन्द्रहवे पदका आराधन करे ॥

गौतम पदाराधन से हरिवाहन तीर्थंकर हुए ॥

॥ इति पंचदश पदाराधन विधि ॥

अथ षोडश पदाराधन विधि ॥१६॥

(माला—)

"ॐनमो जिणाणं" इस पद की २० माला फेरे ।

(खमासमण—)

१ श्री सीमन्धर जिनेश्वराय नमः

२ श्री युगन्धर जिनेश्वराय नमः

३ श्री बहु जिनेश्वराय नमः

४ श्री सुबाहु जिनेश्वराय नमः

५ श्री सुजात जिनेश्वराय नम

६ श्री स्वयंप्रभु जिनेश्वराय नम

७ श्री ऋषभानन जिनेश्वराय नमः

८ श्री अनन्तवीर्य जिनेश्वराय नमः

९ श्री सूरप्रभु जिनेश्वराय नमः

१० श्री विशाल जिनेश्वराय नमः

११ श्री वज्रधर जिनेश्वराय नमः

१२ श्री चन्द्रानन जिनेश्वराय नमः

१३ श्री चन्द्रबाहु जिनेश्वराय नमः

१४ श्री भुजङ्ग स्वामी जिनेश्वराय नमः

१५ श्री ईश्वर जिनेश्वराय नमः

१६ श्री नेमिप्रभु जिनेश्वराय नमः

१७ श्री वीरसेन जिनेश्वराय नमः

१८ श्री महाभद्र जिनेश्वराय नमः

१९ श्री देवसेन जिनेश्वराय नमः

२० श्री अजितवीर्य जिनेश्वराय नमः

(२० लोगस्सका काउस्सग करें)

स्तुति—

श्री तीर्थङ्कर, केवली, अवधी-ज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी चतुर्दशपूर्व, दशपूर्व, उत्कृष्ट लब्धीवाले चारित्रीकों जिन कहते हैं, उनका वैयावृत्ति करे तथा उनके परि-वार जो आचार्य, उपाध्याय, साधु, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी, चैत्य, श्रमणसंघ ए सब जिनाज्ञाका आराधक है, बड़े गुणी हैं, इससे जिन पदमें इन्होंको वैयावृत्ति करना हमारे मनुष्य भवका लाभ है जो जिनपदकी आरा-

धना करे सो जिन होवे, वह धन्य है, कृत्य पुण्य है जिन्होंने पूर्वोक्त दश पदकी वैयावृत्ति किया वही आराधक है, अन्त संसारी है, श्री जिनजीके सेवन वैयावृत्ति का अजब तमाशा है। जैसे धन्य हरिहरादि देव सातिशय भक्ति से प्रसन्न होते हैं और आसातना बेअदबीसे अप्रसन्न होते हैं। वैसे श्री जिनदेव रीझते खीझते नहीं जैसे अन्यदेव अपराधीकों जलाबला कर भस्म कर देते हैं वैसे जिनदेव कोप कभी नहीं करते और जिनके सेवा करनेवाले इप्सित फलको पाते हैं, जिनके समान होते हैं और जिनके आसातना करनेवाले तुरन्त दुःख भोगी होते हैं ऐसा निःकलंक निर्विकार निष्काम निरञ्जन सर्वगुण सम्पूर्ण जिनदेव अनन्त भव भ्रमण करके बड़े भाग्यसें मिले और पहचाने गए, अब कुछभी न्यून नहीं रहा एसे स्वामी कैसे मिल सक्ता है जो सेवकसे दिल प्रसन्नसे प्रसन्न हो ऐसे स्वामीकी सेवा क्यों कर छोड़ा जाय एसा साधन पाकर साधन न करे वही बड़ा मूर्ख है, बड़ा भाग्यहीन है, इस लिये हमारी गति मति स्थिति आधार प्राण शरण साध्य साधन सब श्रीजिनेन्द्रका चरणारबिन्द है,

उनको प्रतिक्षण हमारी वन्दना हो। इस प्रकार स्तुति करके पोरणा के दिन अष्ट भेदी, सत्तर भेदी अथवो अष्टोत्तर क्षत भेदो पूजा करे, देरासर बनावे, प्रतिमाकी (उत्तारणा) करे, प्रातिहार्य शोभा करे, बाल वृद्ध तपस्वीको ओषध दे तेल मर्दन करे, विलेपन अंग संवहन करे, वड़ी २ खबर रखे, श्री संघमें दीन दुखीको सहाय्य करे ॥

इस जिनपद के आराधनसे जीमूतवाहन जीन हुआ।

॥ इति षोडश पदाराधन विधि ॥

॥ अथ सप्तदश पदाराधन विधि ॥१७॥

(माला—)

"ॐ नमो संयमस्स" इस पदकी २० माला फेरे'

(खमासमण——)

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमण रूप चारित्र धराय नमः ॥
२ सर्वतः मृषावाद विरमण रूप चारित्र० नमः
३ सर्वतः अदत्तादान विरमण रूप चारित्र० नमः

४ सर्वतः मैथुन विरमण रूप चारित्र० नमः

५ सर्वतः परिग्रह विरमण रूप चारित्र० नमः

६ सर्वतः रात्रिभोजन विरमण रूप चारित्र० नमः

७ इर्या समिति सम्पन्न रूप चारित्र० नमः

८ भाषा समिति रूप चारित्र० नमः

९ एषणा समिति रूप चारित्र० नमः

१० आदानभाण्डमात्र निक्षेपणा समितिरूप चारित्र० नमः

११ परिष्ठापनिका समितिरूप चारित्र० नमः

१२ मनोगुप्तिरूप चारित्र० नमः

१३ वचनगुप्तिरूप चारित्र० नमः

१४ कायगुप्तिरूप चारित्र० नमः

१५ मनोदण्ड विरताय चारित्रधराय नमः

१६ वचनदण्ड रहिताय चारित्र० नमः

१७ कायदण्ड विरताय चारित्र० नमः

(१७ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति—

चारित्रधारिसाधु पांच समिति तीन गुप्तिसे गुप्त निजस्वरूपमें

रमता, इन्द्रियगण को दमन करता, सकल परभाव वमन करता ध्यानानलसें कर्मेन्धनको जलाता, सर्व उपसर्ग परीषदकों क्षमासे सहन करता नवीन २ अभिग्रह रूप तपका अनुष्ठान करके चारित्र धर्मको जमाता हुआ सदा गुरुचरण में नमता, कदापि समताको नहीं छोड़ता, यथावसर शुद्ध आहार के लिए भ्रमण करता, नव २ शास्त्रको पढ़ता प्रतिक्षण शुद्धपयोग रखता, प्रतिक्षण वीर्थ श्रद्धा संवेग वैराग्यसे मिथ्यात्व मोहको हनता, शत्रु मित्रमें समचित्त, दिन रात सभामें एकाकी सोये जागे अभिन्नरूप निस्पृहता, पृथ्वीके समान सर्वसह, आकाशके समान निरालम्बन्, मेरुके समान अकम्प, चन्द्र इव सौम्य, असिके समान तपसे गुप्तेन्द्रिय, वैल इव व्रत वहन समर्थ, सिंह इव अङ्गीकृत निर्वाहक, शंख इव निरंज, कमल पत्र इव निर्लेप, इत्यादि गुणगणसे अलंकृत गात्र परम गात्र चारित्रधारी को वन्दन नमन सत्कार सम्मान करें, क्रियाका अनुमोदन करें, वही हमारा परम गुरु है, इत्यादि प्रकारसे स्तुति कर के पारणाके दिन ५ मोदक रूपा वा सोना पर चारित्र गर्भित करके परमेश्वरके आगे रखे तथा चतुर्विधसंघका द्रव्य भावसे भक्ति करे॥

उन्मार्ग गामीको सुमार्गमें लावे स्थिर करे। संयम पदाराधनसे पुरन्दरराजा तीर्थंकर हुआ ॥

॥ इति सप्तदश पदाराधन विधि ॥

॥अथ अष्टादश पदाराधन विधि॥१८॥

(माला—)

"ॐ नमो अभिनव नाणस्स"

इस पद की २० माला फेरे

(खमा समण—)

१ श्री आचाराङ्ग सूत्राय नमः

२ श्री सूयगडांग सूत्राय नमः

३ श्री ठाणांग सूत्राय नमः

४ श्री समवायाङ्ग सूत्राय नमः

५ श्री भगवती सूत्राय नमः

श्री ज्ञाताधर्म सूत्राय नमः

। उपाशक दशा सूत्राय नमः

८ श्री अन्तगड दशा सूत्राय नमः

९ श्री अनुत्तरोवाई सूत्राय नमः

१० श्री प्रश्न व्याकरण सूत्राय नमः

११ श्री विपाक सूत्राय नमः

१२ श्री उववाई सूत्राय नमः

१३ श्री रायपसेणी सूत्राय नमः

१४ श्री जीवाभिगम सूत्राय नमः

१५ श्री पन्नवणा सूत्राय नमः

१६ श्री जम्बुद्वीपपन्नत्ती सूत्राय नमः

१७ श्री चन्दपन्नत्ती सूत्राय नमः

१८ श्री सूरपन्नत्ती सूत्राय नमः

१९ श्री निरयावली सूत्राय नमः

२० श्री पुप्फावली सूत्राय नमः

२१ श्री पुप्फचुलिया सूत्राय नमः

२२ श्री कल्पिका सूत्राय नमः

२३ श्री वन्हिदशा सूत्राय नमः

२४ श्री चउसरण सूत्राय नमः

२५ श्री संथारापइन्ना सूत्राय नमः

२६ श्री भत्तपइन्ना सूत्राय नमः

२७ श्री चन्द्राविज्जापइन्ना सूत्राय नमः

२८ श्री मरणविभत्ति पइन्ना सूत्राय नमः

२९ श्री गणि विजोपइन्ना सूत्राय नमः

३० श्री तंदुलवेयालिय पइन्ना सूत्राय नमः

३१ श्री देवेन्द्रस्तव पइन्ना सूत्राय नमः

३२ श्री आउरपच्चक्खाण पइन्ना सूत्राये नमः

३३ श्री महा पच्चक्खाण पइन्ना सूत्राय नमः

३४ श्री दश वैकालिक मूल सूत्राय नमः

३५ श्री उत्तराध्ययन मूल सूत्राय नमः

३६ श्री आवश्यक मूल सूत्राय नमः

३७ श्री पिण्डनिर्युक्ति मूल सूत्राय नमः

३८ श्री व्यवहारच्छेद सूत्राय नमः

३९ श्री निशिथच्छेद सूत्राय नमः

४० श्री महानिशीथच्छेद सूत्राय नमः

४१ श्री दशाश्रुतस्कन्धच्छेद सूत्राय नमः

४२ श्री जीतकल्पच्छेद सूत्राय नमः

४३ श्री पंचकल्पच्छेद सूत्राय नमः
४४ श्री नन्दीचूलिका सूत्राय नमः
४५ श्री अनुयोगद्वार चूलिका सूत्राय नमः
४६ श्री स्यादस्तिभंगप्ररूपकायस्याद्वाद सूत्राय नमः
४७ श्री स्यादनास्तिभंग प्ररूपकाय स्याद्वाद सूत्रायनमः
४८ श्री स्यादस्तिनास्तिभंग प्ररूपकाय स्याद्वाद सूत्राय नमः
४९ श्री स्याद वक्तव्य भग प्ररूपकाय सूत्राय नमः
५० श्री स्यादस्ति अवक्तव्य भंग प्ररूपकाय सूत्राय नमः
५१ श्री स्यादनास्तिभंग प्ररुपकाय सूत्राय नमः
५२ श्री स्यादस्ति अव्यक्त भंग प्ररुपकाय सूत्राय नमः
(५२ लोगस्सका काउसग्ग करे)

स्तुति--

जगत्में ज्ञान महा उपकारी है, ज्ञानही जगतमें निष्कारण बान्धव हितकारी सुखकारी है, ज्ञान मिथ्यात्व रुप अन्धकारको नाश करनेको सूर्य है, संसारसमुद्र तरने

को जहाज है, ज्ञान मनुष्य भवका रत्न है, कुरूपका रूप ज्ञान है, ज्ञान परम देव है, ज्ञान अनन्त नेत्र है, ज्ञान देश विदेश सर्वत्र पूज्य है, ज्ञानसे सब दुख छुटता है, छठ अट्ठम दशम प्रमुख उग्र तपस्याकारी अज्ञानीकी जो शुद्धता होती है उससे अनन्त गुणा अधिक ज्ञानी की शुद्धता होती है। करोड़ों भवमें अज्ञानीको तपस्या करके जितना निर्जरा नहीं होती उतना ज्ञानी एक क्षण में निर्जरा करता है, पेय अपेय, खाद्य अखाद्य, कर्तव्य अकर्तव्य, सेव्य असेव्य हित अहित, लोक अलोक, स्व पर, गुण अगुण, इहलोक, परलोक, सत्य असत्य, द्रव्य अद्रव्य, कारण कार्य निश्चय व्यवहार द्रव्य, भाव, कारण कार्य, निश्चय व्यवहार द्रव्य गुणपर्याय ध्यान ध्येय ध्याता ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता दान देवदाता सम्यक् असम्यक् स्वभाव परभाव ये सब सम्यक् स्याद्वाद शैलीमय आगम ज्ञान बिना कोई तत्व नहीं पाता सब क्रियाका मूल श्रद्धा और श्रद्धाका मूल ज्ञान है प्रथम ज्ञान होवे तो श्रद्धा होती है। इसलिये ज्ञानीका जीना सफल है, अज्ञानी को जीवन भव पूरण है इससे जो सम्यग् ज्ञानका

अभ्यास करे सो धन्य है ॥ इस कारणसे सम्यग् ज्ञानीको हमारी नित्य वन्दना है हमारा सर्व सुखदाता ज्ञान है इत्यादि स्तुति करके पीछे पारणामें सम्यक् श्रुतदाता गुरुको वन्दना अङ्ग पूजा करे, धर्माचार्यको यथोचित् बहुमान करे पुस्तक दे, ज्ञानका उपकरण दे, नूतन पुस्तकलिखावे, ओली पर्यन्त नूतनशास्त्र सुने, आगम सूत्रका अर्थ सुने, जीन भण्डारकी रक्षा करे, प्रतिक्षण आत्मज्ञानमें मग्न रहे ॥ ज्ञान पदाराधनसे सागरचन्द्र तीर्थंकर हुआ ॥

॥ इति अष्टादश पदाराधन विधि ॥

एकोनविंशतितमपदाराधनविधि॥१९॥

(नमोसुअनाणस्स) ॥ इस पदको २० माला जप करके भक्ति भावित हृदय होकर श्रुत भेद याद करके वन्दना कर खमासणा दे :—

१ पर्याय श्रुतज्ञानाय नमः

२ पर्याय समास श्रुतज्ञानाय नमः

३ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः

४. अक्षर समास श्रुतज्ञानाय नमः

५ पदश्रुतज्ञानाय नमः

६ समास श्रुतज्ञानाय नमः

७ संघात श्रुतज्ञानाय नमः

८ संघात समास श्रुतज्ञानाय नमः

६ प्रतिपत्ति श्रुतज्ञानाय नमः

१० प्रतिपत्ति समास श्रुतज्ञानाय नमः

११ अनुयोग श्रुतज्ञानाय नमः

१२ अनुयोग समास श्रुतज्ञानाय नमः

१३ पाहुड पाहुड श्रुतज्ञानाय नमः

१४ पाहुड पाहुड समास श्रुतज्ञानाय नमः

१५ पाहुड श्रुतज्ञानाय नमः

१६ पाहुड समास श्रुतज्ञानाय नमः

१७ वस्तु श्रुतज्ञानाय नमः

१८ वस्तु समास श्रुतज्ञानाय नमः

१६ पूर्व श्रुतज्ञानाय नमः

२० पूर्व समास श्रुतज्ञानाय नमः

(२० लोगस्सका काउस्सग करे)

स्तुति—

शास्त्रमें श्रुत ज्ञानको भगवान जीने कहे हैं श्रुत-धारी केवलीको उपमा पाता है, उत्तराध्ययन सूत्रमें बहुश्रुतकों बड़ीर उपमा देकर वीरस्वामीने अपने मुखसे कहा है श्रुत ज्ञान स्वपरोपकारी है जिसको श्रुताभ्यास नहीं है वह अज्ञानी है, लोकमेंभी कहा जाता है कि हित कारक मूर्खसे पण्डित शत्रुभी अच्छा है, आगम श्रुतरूप समुद्र अपार है, जैसे समुद्र रत्नादि अनेक चीजोंसे भरा है, वैसे श्रुत जलधि अनेक आम्नाय से भरा है उसमें प्रथम आचाराङ्ग अठारह हजार पद है और आचार्यकी वार्ता मुख्य है, आगे सुकृताङ्ग प्रमुख १० अङ्ग द्विगुण २ पद है, पदका प्रमाण गाथासे जान लेना ॥ गाथा ॥ 'यथा लक्खा अडसट्ठ गयं सहस्स सत्त व अट्ठअ ॥ उसीउक्टिकालपय, भासिय गणहार धाहेहि ॥ १ ॥ पय इक्किकं अखर संख्या कोडि यण सहस्सायं उवरिषडसय कोडीकोडी, चउतीसतहउवरि॥ ॥ २ ॥ अर्थात् ३४६८०७८८० अक्षर एक पदमें होता

हैं, और इग्यार ही अंगमें सब मिलकर ३६५४ २००० पद होता है, बारहवाँ अंग दृष्टिवाद है, उसका पार गणधरके सिवाय दूसरा नहीं पा सक्ता गणी पिडक कहाता है बारहवां अंगका अधिकार मात्र चौदह पूर्व है, उसमें प्रथम उत्पादपूर्व एक करोड़ पद है, उसमें सर्व द्रव्यका उत्पाद व्यय ध्रोव्यका परिज्ञान है, दुसरा अग्राणी पूर्व ९६ लाख पद है उसमें सब बीजका माना टोटल मिलाया है तीसरा वीर्य प्रवाद पूर्व ७० लाख पद है, उसमें बल प्रयत्न कार्य और बलवन्तका रूप वर्णन है, चौथा अस्तनास्ति प्रवाद पूर्व ७ लाख पद है, उसमे कुल अस्तिनास्ति स्वभावरूप सप्तभंगी स्याद्वाद है स्वपरभंगका पात्र है, पांचवां ज्ञनप्रवाद पूर्व १ कोटि प्रमाण पद है मत्यादि पाँच ज्ञानका स्वरूप भेद मुख्य है छठवां सत्य प्रवाद का १ कोटि प्रमाण सत्यादि भाषा स्वरूप सर्व भाषा भाषक वाच्य वाचिक स्वरूप है ।। सातवां आत्मप्रवाद पूर्व १ कोटि पद प्रमाण है, उसमें आत्म द्रव्यका कर्तृत्व, भोक्तृत्व, नित्यत्व, अनित्यत्वादि आत्म धर्मका स्वरूप है, आठवां कर्मप्रवा-

पद प्रमाण है, उसमें पच्चख्खानका स्वरूप द्रव्य भावसे निश्चय व्यवहारसे है, और उपादेय प्रमुख सर्व शैली है ॥ मशमां विद्याप्रवाद पूर्व एक कोटि १० लाखपद प्रमाण है, उसमें गुरु लघु अंगुष्ट सेनाख्य सातसौ विद्या और रोहणी प्रमुख पांचसौ महाविद्याओंका स्वरूप है। इग्यारहवांह कल्याणनाम पूर्व २६ कोटि प्रमाण पद है, उसमें सव ज्योतिशास्त्रस्वरूप पुरुषको आश्रय करके चतुर्विध देवताका कल्याण जो पुण्यफल उसका स्वरूप है ॥ बारहवां प्राणवायु पूर्व १३ कोटिपदप्रमाण है, उसमें आयुर्वेदकी प्रक्रिया कही है, और प्राणादि १० वायुका स्वरूप प्राणायामादि योगका स्वरूप कहा है। तेरहवां क्रियाबिशाल नाम पूर्व ९ कोटिपद प्रमाण है; उसमें छन्दशास्त्र, शब्दशास्त्र, सव शिल्प सकलकला तात्विक औपाधिक सव गुणोंकास्वरूप है। चौदहवां विन्दुसार पूर्व १कोटि ६० लाख पद प्रमाण है; उसमें काल स्वरुप अष्ट व्यवहार विधि, निःशेष श्रुत सम्पदा इत्यादि स्वरुप है, एसै १४ पूर्व है, एसे ४ अधिकार और भी दृष्टिवाद में है। इस प्रकारका श्रुत जलधि स्याद्वादकी शैली चार अनुयोगद्वार, सात मूलनत सात सौ नयका उत्त-

रभेद दो मुख्य प्रमाण अनेक प्रमाणान्तर अनेक निक्षेप स'
प्तनयनभंगी इत्यादि अनेक दार नहित एक एक पदकी
व्याख्या है, जिसमें ऐसे श्रुतधारी का तुलना कौन कर स-
कता हैं, श्री जैनागम रुप श्रुत जलधि गुणरत्नसे भरा हैं,
वह आगमाज्ञा हमारा परम तत्व हैं, उसका श्रवण मनन
हमारा साध्य का दाता हैं इस लिये श्रुतको हमारी त्रि-
काल वन्दना है, श्रुतधारी को अङ्गपूजा वस्त्र आहारादिदे-
कर सेवा करे, नयापुस्तकोंका वस्त्र प्रमुखसें रक्षा करे न-
वीन रूमाल पाठा ठवणी माला काँबि पाटी कलम स्याही
प्रमुख ज्ञानोपकरण करावे, आप पढ़े पढ़ावे, सुने सुनावे,
आगमका बहुमान करे, सो आगम विरुद्ध न करे, अन्तरङ्ग
भक्ति करे व भाव भक्ति है, इसभक्तिको करनेसे अनन्त
चतुष्टयीको प्राप्त होता है, और बहुमान से ओली पर्यन्त
नया २ शास्त्र पढे, इस प्रकार श्रुतपदके आराधनसे मनु-
ष्य को ज्ञान प्राप्त होवे ॥ श्रुतपदके आराधन से रत्न चूड
तीर्थंकर हुआ ॥

॥ इति एकोनवींशतितम पदाराधन विधि ॥

॥ अथ विंशतितम पदाराधनविधि ॥२०॥

(माला—)

"ॐ नमो तीत्थस्स" इस पदको २० माला फेरे।

(खमासमण—)

१ सर्वतो प्राणातिपात विरमणव्रते श्री साधुतीर्थाय नमः
२ सर्वतो मृषावाद विरमणव्रते श्री. सा०
३ सर्वतोऽदत्तादान विरमणव्रते श्री. सा०
४ सर्वतो मैथुन विरमणव्रते श्री. सा०
५ सर्वतः परिग्रह विरमणव्रते श्री. सा०
६ समस्त पृथ्वीकाय रक्षकाय श्री. सा०
७ समस्त अप्काय रक्षकाय श्री. सा
८ समस्त तेजस्काय रक्षकाय श्री. सा०
९ समस्त वायुकाय रक्षकाय श्री सा०
१० समस्त वनस्पतिकाय रक्षकाय श्री. सा०
११ समस्त त्रसकाय रक्षकाय श्री. स०
१२ समस्त क्रोध दोष रहिताय श्री. सा०

१३ समस्त मान दोष रहिताय श्री. सा॰

१४ समस्त माया दोष रहिताय श्री. सा॰

१५ समस्त लोभ दोष रहिताय श्री. सा॰

१६ समस्त रागांश विरताय समतो युक्ताय श्री. सा॰

१७ समस्त द्वेष असुयादि दोष रहिताय सहजौदासिन्य गुणयुक्ताय श्री साधुतीर्थाय नमः ॥

॥ अथ श्रावक गुणाः ॥

१ समस्त सम्यग्गुणजननी गात्र लज्जा गुण युक्ताय सम्यग् देशविरति रूप श्री तीर्थ गुणाय नमः ॥

२ दयागुण युक्ताय सम्यग् देशविरति रूप तीर्थ गुणाय नमः,

३ कुमति कदाग्रह कुयुक्ति पक्षपात रहिताय-मध्यस्थ गुणयुक्ताय तीर्थ॰

४ मन वचन कायैः क्रूरता रहित सौम्यगुण युक्तायसम्यग् देश॰

५ समस्त विद्या सम्यग् गुण राग रूप सम्यग् देश॰

६ क्षुद्रता रहित अति गम्भीरता उदारता सहित

स्वपर भेद रहित सर्व जनोपकारक रूप
तीर्थगुणाय नमः

७ पूर्व भवकृत दयाधर्म फल सर्वत्र दर्शनाय संघ
प्रभावना हेतु रूप तीर्थ०

८ वर्जित पापकर्म जगन्मित्र सुखोपासनीय परमो
परम कारण रूप सोम्य प्रकृति तीर्थगुणाय नमः ।

९ द्रव्य क्षेत्र काल भाव लोकधर्म विरुद्ध वर्जन रूप
जन प्रिय तीर्थ०

१० मलिनक्लिष्ट भाव रहित सरल सदय गमनयो
रूप अक्रूर तीर्थ०

११ इह लोके पर लोके वा रोग शोक जन्म जरा मरण
दुर्गति पतन भयात् सदा धर्माधिकारी रूप
पापकर्म भीरु तीर्थ०

१२ परावंचक सर्वजन विश्वसनीय प्रशंसनीय
भावैकतान धर्मोद्यम रूप तीर्थ-
गुणाय नम०

१३ प्रधान्येन परकार्य साधक सर्व जनोपा-
देय वचन रूप दाक्षिण्य तीर्थ०

१४ सत्यधर्म ज्ञापक परद्वेष प्रकृति अनर्थ वर्जनरूप मध्यरूप तीर्थ०

१५ धर्मतत्व ज्ञापक शुभ कथाकारी विवेक गुणोद्दीपक अशुभ कथा वर्जक रूप सत्कथा तीर्थ०

१६ आप्त धर्मशील सदानुकुल परिवार विघ्न रहित धर्म साधन रूप तीर्थ०

१७ अतीतानागत वर्त्तमान हित हेतु कार्य-दर्शक सर्वथा स्वविहित कार्य करण रूप दीर्घदर्शि तीर्थ०

१८ सर्व पदार्थ गुण दोष ज्ञापक कुसंगति बोधक रूप विशेषज्ञ तीर्थ०

१९ वृद्ध परंपरा ज्ञापक सुसंगति रूप वृद्धा-नुगत तीर्थ०

२० सर्व गुण मूल रत्नत्रयी तत्वत्रयी शुद्धता प्रापक रूप विनय तीर्थ०

२१ धर्माचार्यस्य बहुमान कर्ता स्वल्पोपकारमपि अवि-स्मर्ता परगुण योजनोपकारकरण सदा पर-

हितोपदेशकरण कारण रूप परहितकारि अल्प बहुश्रुत तप क्रियादि योग्यता ज्ञापक, यथानुकूल धर्मप्रभाक, सर्व स्वकार्य साक्षिरूप लब्ध लक्ष तीर्थ०

(३८ लोगस्सका काउस्सग करे)

(स्तुति—)

जैसे—तीर्थ किसको कहते हैं बड़ी नदी अगाह बहती हो उसको सब जगह नहीं उतरा जाता किन्तु जिस जगह घाट होता है वहां उतरा जाता है उसीको घाट या उतरा कहा जाता है, वह घाट व्यन्तराधिष्ठित होवे अथवा कोई देव किसीको प्रसन्न हुआ हो तो वह घाट तीर्थ कहा जाता है, और वहां मिथ्यात्वी संसार लोग स्नानादि क्रिया करते हैं सो द्रव्य तीर्थ है ॥ और चतुर्विधि संघ भावतीर्थ है, क्योंकि कर्म संसाररूप बड़ादरिया है उसको पार उतरनेका घाट सुखोत्तार है, अनादि संसारभ्रमणजनित श्रम तापकी हानीहोती है, और अनन्तानुबन्धी प्रमुख कषाय रूप अति तृष्णा (प्यास) लगी है

सो शान्त होती है, और कर्ममल धोया जाताहै, विशुद्धा-ध्यवसाय रूप नौकापर जो चढ़ता है सो क्षणमात्र उस द-रियाको पार पहूँचाता है नहीं तो जिस जगह गहरा घाट होवे वहां नाव भी होवे तरना मुश्किल होता है, इहां भावतीर्थ घाट में अनुत्कट अध्यवसायवान्कों तोर नेके लिए सर्वविरति नाव है उसके अवलम्बनसे मनुष्य पार उतर जाता है, इससे संसार रूप दरिआके पार पहुँचानेका यही नाव है और सुरासुरसे वन्दित चरण ऐसे वर्तमान विरहमान वीस, तीर्थकर, गणधर, जैन-शासन को सुशोभित करनेवाले आत्मार्थी साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूप श्री संघ तीर्थ है, और इसी तीर्थका सेवन हमारा परम साधन है, यही तीर्थ सुखका स्थान है, इसीके संगसे सर्व कर्म नष्ट होवेंगे, इसीके संगसे सब अध्यात्मिक छह सम्पदा मिलेगी, इस वास्ते हमको इसी तीर्थका सेवन परम धर्म करणीय है ॥ इत्यादि स्तुति कर-के श्री तीर्थ प्रभावक पूर्व पुरुष साधक श्रावककों भोजन कराय अनुमोदन करे, पारणांमें स्वामी वत्सल प्रभावना

करे, अमारीका पटह वजावे, श्री संघ सहित तीर्थयात्रा
रथयात्रा करे, अथवा १७ प्रकारी २१ प्रकारी १०८ प्रका-
री वा यथाशक्ति पूजा करावे जिस प्रकार जीव धर्म को
अनुमोदन करे, धर्म को स्वीकार करे वैसो उन्नति करे
अथवा जिन बिम्ब बनावे, प्रष्ठिा करावे, सातो क्षेत्र की
उन्नति करे, संघ में दुखी को साहाय्य करे ४५ आगम सूत्र
से अथवा अर्थ सहित यथायोग्य श्रवण पठन करे पढ़ने वा-
लेको आहार शास्त्र औषध प्रमुखका साहाय्य करे, बलहीन
का वैयावृत्ति करे (सेवा) तपस्वीका सेवा सम्यक् गुण
युक्त पुरुषका यश प्रतिष्ठा वढ़ावे, जीर्णोद्धार करावे ए
सब क्रियाको आगमके नियमानुसार हम व्यर्थ कष्ट करते
हैं ऐसा भावसे रहित होकर केवल मूढ़ता पश्चाताप दृष्टि-
राग रहित होकर केवल मोक्षार्थ अनुत्कण्ठासे तीर्थश्रद्धा
संवेग भावसे परम हर्षसे भरा और परम लाभ मानता वार
वार अनुमोदन करता अपनी शक्तिमें न्यूनता नहीं समझता
निशंक जो क्रिया करता है उसका सर्व कर्म नष्ट होता है
और वह अक्षय अविनाशीपदको प्राप्त होता है इसी तरह

वीस पदका आराधन करे एक एक पदका प्रभावना उत्सव करे और जब २० ओली पुरी होतो यथाशक्ति उजमना करे और साधर्मी वत्सल करे चतुर्विधसंघको घर में ला-कर बहुमान सत्कार करे, साधर्मिको वस्त्रादि रूप पहिरावनी करे प्रभु गुण गायकको उदार चितसे दान देवे, देव गुरु धर्माचार्यका पधरावनी करे ५ गुणी-को दान देवे ए सब क्रिया करके ४०० उत्तम मोदक रूपा सोना अथवा रत्न गर्भित करके साधर्मिकों देवे, उस मोदक में एकभी दूसरे धर्मवालेकों धर्म समझ कर न देवे, इस विधिसेशुद्ध श्रद्धावान वीसस्थानक तप आराधन करे तो इस लोकमें मान मुहब्बत लजा प्रतिष्ठा सुख सौभाग्य अनेक ऋद्धि विलासपावे,परभव में देवलोकका सुख अनुभव करके तीसरे भवमें सकल सुरासुर वन्दनीय पूजनीय तीर्थङ्कर पदको पावे ॥ समस्त कर्म क्षय करके केवलज्ञान दर्शन चारित्र पाकर शाश्वत सुखको अनुभव करे ॥ तीर्थपदके आरा-धनसे मेरुप्रभ तीर्थङ्कर हुआ ॥ इति ॥

॥ इति श्री वीस स्थानक तपोविधि ॥

वीश स्थानक स्तवन ॥खं०॥

ढाल (वीर सुणो मेरी वीनती एहनां देशीः) वीस थानक तप सेवोयै, भव्य प्राणीरे आंणी मनभाव । श्री अरिहंत इम उपदिसै, ए तपनां रे मोटा परभाव ॥ १ ॥ वी ॥ नमो अरिहंताण गुणौं, पद पहिलैरे मन हरष अपार । द्रव्यत भावत भेद सुं जिन पूजा रे करौ अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वी०॥ नमो सिद्धाणंराहवौ, शुद्ध चित्त रे गुणो वीजै ठांण । आराधौ सिद्ध चक्रनु, जिम थायैरे नर जनम प्रमाण ॥ ३ ॥ वी० ॥ पवयणस नमो गुणौ, तीजै ठांणैरै करौ नाण अभ्यास । भक्ति करो सिद्धांत तणी, जिमयां भौरे तुम्है लील विलास ॥४॥ व०॥ आयरियोणं नमो गुणो, चौथौ बोलैरे पूज्यौ गुरुन पाय । नमो थेराणं पांच में, गुणौं सेवोरे धरमी मुनिराय ॥५॥ वी० ॥ पंडित गुरु नै पूजीयै, छठै गुणीयै रे नमो उवज्झायाणं नमो सव्वसाहू सातमैं, वलि सेवोरे तपसी वरुजांण ॥

वी० ॥६॥ नमो नाणीणं आठमें गुणौं, भणीयैरे नवा तवन सिझाय । नमो दंसणधारी गुणौं, पालौ नवमैं रे समीकत सुखदायक ॥ ७ ॥ वी० ॥ विनय संपन्न नमौ इसौ, पद दसमैं रे गुणीयै सुभ ध्यांन । विनय करौ गुणवतनौं, इण रीतै रेल हिये शिव ध्यांन ॥८॥ इग्यार मथा नेक करौ, पडिक्कमणां रे बे सांजि सवार । चारित्रस्स नमो इसा, पद ध्यावो रे सुखदातार ॥६॥ वी० । गुणौवं भयरीणं नमो, आठ पुहरीरे कीजै पोसहलील । कारमैं ठाणौं नमो, आठ पुहरोरे कीजै पोसहलील । बारमें ठाणैं पोलिये सुभ भावरे निरमल गुणसील ॥ १०॥ वी० नमो किरिया धारी भणी, इम गुणोयै रे नित तेरमैं गंण । समकित पिण लोजीयै दोप टालौ रे बत्रीस प्रमाण ॥११ वी० । तप अधिक करो चवदह में, नमो तवसोरे गुणीये मन रंग । तपसो सेवा कीजीयै, वलो रहियै रेत पसीनें ॥१२ वी० ॥ (ढाल २) थंभण पुर श्री पास जिणंदो एहनी, अतिथी दान बहुभावे दीजै । नमो गोय माईणं गुणे जै परम किरिया एह । प्रतिभानु भूपण परिहावौ, नमो जिणाणं एह पद ध्यावै,

सोलमैं धरम सनेह ॥ १३ वी० अठ पुहरी पोहस विधि करीयै, ध्यांन नमौ चारित्त सम धरियै । एह विधि सतरम ठांण, नवो नांण उछरंगै भणीयै, नमो नांण सगुणनौं गुणीयै अठारम परिमांण ॥१४ ॥बी० नमो सुयस्स गुणो मन चंगै पुस्तक पूजौ बहु भंगै । 'उगणी सम रीत नमो त्रिछ ए ध्यांन धरावौ, संघ बहुर विधि भक्ति करावौ । वोसमैं शास्त्र बे दीत ॥ १५ ॥बी० (ढाल त्रीजी) दोय दोय सहस प्रत्येकेंरे, गुणयै गुणानौ सुविवेकैं च्यारसौ उपवास पूरीजौरे, समकित गुण शुद्ध धरीजे ॥१६॥वी० भावस्तव चारित्त धारीरै, द्रव्य भाव विध सागारी । सेवें जे सुभ मतिधारो, ते मोक्ष तणा अधिकारी ॥ १७ ॥ वि० वीस थांनक विध चाणीरे, सेवो मनउ लट आंणोरे, विधिस्युं जो ए तय बहीयै रे, तो तीर्थंकर पद लहीयै रे ॥ १८ ॥ वी०

कलश इम वीस थांनिक तप तणी विधि शास्त्रनैं अनुसार ए, जेवहै नर नारि विधिसुं धन्य तसुं अवतार ए श्री रतन पुर वर संघ सुख कर अजितनाथ जिणेसरौ, तसु चरण पंकज प्रणामि भावैं कहैं वसतो मुनिवरौ ॥१६॥ इति श्री वीस थानिक वृद्धि स्तवन ।

श्री बीकानेर सं० १८९० रा मिती फागुन वदि १

श्री बीस स्थानक तप स्तवन । ख० ।

भलइ भावि मन रंगि चंग भर वीरजिणेसर ।
पाय लागि पणमेवि सेवजसु करइ सुरेसर ॥
वीस थानक त्रिधि लेस भणिसु आगम अणूसारई ।
धरीय विधि साल पालि भव भमण निवारइ ॥१ ॥
पढम पूय करि अट्ठभेय नमो अरिहंताणं ।
बीजइ थानिक सिद्धि भक्ति गुणि नमो सिद्धाणं ॥
त्रीजइ कीजइ संघ सेवि, जिण पवयण सारी ।
नमो पवणस दोय, गुणि झति विचार ॥ २ ॥
चउथइ सहगुरु विधइ वंदि, नमो आयरियाणं ।
नमो थे राणं थिवर सेव; पंचमि सुह झाणं ॥
छट्ठइ बहु सुय सेव, पुन्न, नम उवज्झायाणं ।
नमो लोए सव्व साहू सेटि, मुनि सत्तम ठाणं ॥ ३॥

ढाल

नमो नाण गुणि अट्ठमि ठाणइ पंच भेय सिझाय वखाणइ
जाणद आगम अत्य निरत्तउ ॥ ४ ॥

समकित नवमइ पालइ नमो नाण दंसण पुणि पद संभालइ । टालइ दूरि मिथ्यात ॥ ५ ॥

दसमइ श्री संघ भगति करीजइ नमो विनयसंपन्न भनीजइ । लीजइ नरभव लाह ॥ ६ ॥

सूधी विध पड़ि कमण कीजइ नमो चारित्त सरसि समरीजइ वाईजइ सिब सुक्ख ॥ ७ ॥

बारमि पालउ शील सुरंगइ नयो बंभवयधारी रंगइ अंगइ चंगि सचाड़ि ॥ ८ ॥

अहोज्ञतियुत पोसह भणियइ तेरमि थाविक ए विधि सुणीयइ गुणियइ किया रयाणं ॥ ९ ॥

ढाल

हिव चवदम ठाणइ, करिवउ तप सुविशेष
तिहां ध्यावइ भावइ, नमेतवस्मी लेखि
पंनरमि फल लीजइ दीजइ दान सुपत्ति
नमो गोयम् सामी, समरि समरि तुझति ॥ १० ॥
पूजा करि सोलम, जिण वेयावच रंगि ॥
सूधइ मन समरइ, नमो जिणाणं रंगि ॥
समाई सगतइ, पोसह सतरमि थानि ।
मन रसि अति हरसइ, नमो चारितस जाण ॥ ११ ॥

अट्ठारस संगिमि, भणियइ नवलउ नाण ।
उपसमरस रंगइ नमिणाण वखाण ॥
उगणीसमि आगम, पूजिय मन उल्लास
निरुपम गुण गावइ, नमो सुयस्स प्रकास ॥ १२ ॥
वर वीसम थानिक; सासन भासन जोग
नमो पवेयणस, पामे जिम सिव भोग ॥
इम वीसइ थानिक, सेवउ बीसइ वार
उपवासइ आंबिल, करि करि निरतिचार ॥ १३ ॥
सद्गुरु गुरु सुखि ऊजरि, वांदउ देव विचार ॥
पूरइ तापि ऊजमि, यथा सकति सुविचार ॥
धन धन ते मानव जे, आराहइ एह ।
जिणवर पद पामइ, अविहड़ सिव सिरिनेह ॥ १४ ॥
वीसथानिक विधि इण परि भणियइ ।
सेवी नित भव सफल गणियइ ॥
भगति रंग मन रंगइ बोलइ ।
इण तव सवरन कोई तोलइ ॥ १५ ॥

॥ इति बीस स्थानक तप स्तवनम् ॥

दशत्रिक आदि की स्तुति ॥त०॥

त्रिण निसीह त्रण प्रदक्षिणा, त्रण प्रणाम करीजेजी।
त्रण प्रकारी पूजा करीने, अवस्था त्रण भावीजेजी॥
त्रण दिशि वर्जि जिन जुवो भूकिमा त्रण पुंजीजेजी।
आलंवन मुद्रा त्रण पणिधान, चैत्य बन्दन त्रण कीजेजी।१
पहले भाव जिन, द्रव्य जिन बीजे त्रीजे एक चैत्य धारोंजे।
चौथे नाम जिन, पांचमे सर्व लोका चैत्य जुहारोजी।
विहरमान छट्ठे जिन वंदो सातमे नाणे निहालो जी।
सिद्धमारग वीर जिन उजित अष्टापद शासनसुर संभालोजी२
शक्र स्तवमां दोय अधिकार-अरिहंतचेईयाणं तीजेजी।
चोबीसत्था माँ दोय प्रकार, श्रुत स्तव दोय लिजेजी॥
सिद्ध स्तव मां पांच प्रकार ए वारे अधिकारो।
निर्युक्ति ए क्रिया जाणो भाष्य माँहे विस्तारोजी॥३॥
तंबोल पान भोजन, बाहन, मेहुण एक चिते धारोजी।
थूक श्लेष्म वड़ी लघु, नीति जुगटे रमवुं वारोजी॥
ए दसे आसातना मोटी, वर्जे जिनवर द्वारेजी।
क्षमा विजय जिन एणी परेजं पै शासन सुरि- भालोजी॥४।

वीस स्थानक देव-वंदन विधि।

'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं' । कहकर वीश स्थानक का चैत्यवंदन और नमोत्थुणं० कहे । पश्चात खमासमणदेकर इरियावाहियं० तस्सउत्त री० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं, कहकर चैत्यवंदन करे इसके बाद जं किंचि० नमोत्थुणं० कहकर खड़े हो जाय। पश्चात् अरिहंतचेइआणं। अन्नत्थ० कहकर एक नवकारका काउसग्ग करना, पोछे 'नमो अरिहंताणं, कहता हुआ काउसग्ग पारकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहकर वीशस्थानक की पहली थुई कहे । इसके बाद लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० कहकर एक नवकारका काउसग्ग करके दूसरी थुई कहे । पीछे पुक्खरवदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० कहकर एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहे । पश्चात् सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ० कहकर एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कहकर चौथी

थुई कहे। अब नीचे बैठकर 'नमोऽत्थुणं०' कहे, अनन्तर खड़े होकर फिर अरिहंतचेईआणं० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर नमोऽर्हत्० कहकर पहेली थुई कहे। पश्चात्‌लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० कहकर एकनवकार का काउस्सग्ग पारकर दूसरी थुई कहे। पीछे पुक्खरवरदी-वड्ढे० सुअस्स भगवओ अन्नत्थ० एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरीथुई कहे। पश्चात् सिद्धाणं बुद्धाणं वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ० एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कहकर चौथी थुई कहे। अब नीचे बैठकर नमोऽत्थुणं० जावंतिचेइआइं० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहरं० वीशस्थानक का स्तवन कहकर जयवीयराय० कहे पश्चात् नमोऽत्थुणं कहे ॥ इति॥

सूचना—

इस पुस्तकमें चैत्यवंदन, स्तवन और स्तुति आदि के आगे ॥ ख० ॥ और ॥ त० ॥ की जो संज्ञायें दीगई है वहां ख० की जगह खरतर गच्छका बनाया हुआ। और त० की जगह तप गछ का बनामा हुआ समझना चाहिये

—:卐:—

श्री नवकार मंत्र–

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमोआयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

—::※::—

दिवाली की रात्रि का गुणना—

(१) बारह बजे पहलेः—
ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामि सर्वज्ञाय नमः।
(२) बारह बजे बाद—
ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामि पारंगताय नमः ।
(३) प्रातकाल होतेः—
ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामि केवलज्ञानाय नमः ।

वीश स्थानक चैत्यवंदनादि संग्रह ॥

चैत्यवंदन ॥ ख० ॥१॥

अतिशयवन्त महन्तरूप, अनुपम गुणधारी। आराधे जिनकुं सकल, तीर्थंकर शिव कारी ॥१॥ अरिहन्त सिद्ध प्रवचन गणी, स्थिविर बहु श्रुत ज्ञान तपसी श्रुतदर्शन विनय, आवश्यक थलिदान ॥२॥ शील क्रिया तप धारिए, वेयावच्च समाधि। ज्ञान ग्रहण श्रुत भक्ति तीर्थ, सेवन त्याग उपाधि ॥३॥ ए विंशति स्थानक अमल, सेवो सरधा युक्त। परमातम सपद प्रगट कारक बंधन मुक्त ॥४॥ मनवांछित सह सिद्धकर, ज्ञायिक सुख भर कंद। जिनको वन्दे भावधर, श्री कुशलेन्दु गणिंद ॥५॥

चैत्यवंदन ॥ ख० ॥२॥

अरिहंत नमो भगवंत नमो, जगतारण जग नाथ नमो प्रभु साथ नमो ॥१॥ पारंगत परम महोदय, अगणित गुण गण सकल अजर अमर अकलङ्क अरोगी, नयना नंदन देव नमो। सुरासुर नरवर नायक, करें प्रभु नित सेव नमो ॥२॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, तुं निष्कारण बंधु नमो। माणकने सरणागत राखो तूंहि कृपारस सिन्धु नमो ॥३॥

चैत्यवंदन ॥ ख० ॥३॥

श्रीअरिहंत अनंत कांति सिद्ध निजगुणरामि, प्रवचन आचारिज स्थविर उवझाया हितकामि । साधु नाण दंसण नवम-विनय चारित्र बखाणो, ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिनवैयावच्च जाणो ॥१॥ समाधि अपूर्वज्ञानग्रह है, श्रुतभक्ति नितसार, तीरथ प्रभावना वीसमो निरुपमसुखदातार प्रथम चरम जगदीश सकल सेवी लही सर्वदा, इक दो त्रण पद जपो बावीस जिनवर पद मुदा ॥२॥ ए विशतिथानक कह्याए, ज्ञाताए जिनचंद, ए सेवनथी भवि लहे त्रिभुवनपति कृपाचन्द ॥३॥

॥ इति संपूर्ण ॥

चैत्यवंदन ॥ त० ॥४॥

चोविस पंदर पिसतालीसनो, छन्नीसनो करिये । दश पच-वीस सत्ताविसनो, काउसग्ग मन धरिये ॥१॥ पंच सडसठी दस-त्रली सीत्तेर, नव पणवीस वार छड्वीस लोगस्स तणो, काउ-स्सग्ग धरो गुणीस ॥२॥ वीस सीत्तर इगवन्न, द्वादशने पंच एणी परें काउसग्ग जो करे, तो जाये भवसंच ॥३॥ अनुक्रमे काउसग्ग मनधरी, गुनि लेजेवीस वीस थानकएम, जानीए, संक्षेप थी लेश ॥४॥ भावधरी मनमां घणीए, जो एक पद आराधे, जिन उत्तम पद पद्मने नमिनिज कारज साधे ॥५॥

अथ वीस स्थानक स्तुति ॥ख० ॥१॥

निरमल आतम भाव प्रकाशक कारक क्षायिक भावीजी, जिन पद वर्णक कर्मनिकन्दक वीस थानक भवीसेवीजी जिनवर सहुजे स्थानकसेवे, एक अनेक भव तीजेजी आराधन ते साधन भावे, मन वांछित सब सीभेजी ॥१॥ अरिहन्त सिद्ध प्रवचन आचारज, स्थिविर बहु श्रुत तपसीजी। श्रुत दरशन विनयी आवश्यक, शील क्रिया तपवासीजी। गणधर वेयावचा सुसमाधी, जिन ज्ञान ग्रहण श्रुत भगतीजी। प्रवचनए, विंशती पद भाषक, जिन नमिए सहु जुगतीजी ॥२॥ अट्ठमतव उपवास अबिलतप। एकासण निज सगतीजी। करिए ओली षटमास भीतर, आराधन बहु भगतेजी ॥ आरम्भ टाली पोषधधारी दोय सहस जपगणिएजी। काउसग्गकारी दोषनिवारी, देवपूजन श्रुत करिएजी ॥३॥ शाशन रक्षक समकित धारी, जे सहु सुर सुखकंदाजी। सानिधकरज्यो ते तप करता, वधते भाव अमन्दाजी। श्रीजिन लाभ सुरीश्वर शाखा, श्री कुशलेन्दु गणिंदाजी। तस पद सेवक मंगल पतिगणि। जंपे श्री बालचन्दाजी ॥४॥

स्तुति ॥ ख० ॥२॥

अरिहन्त सिद्ध पवयण, आचारज थिवराण।
पाठक मुनिवर ज्ञाने, दर्शन विनय वखांण॥
चारित्र ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिन माण।
संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसठाण ॥१॥

उत्कृष्टि जिनवर एकसा सित्तर धीर।
वलीकाल जघन्ये जिनवर वीस गम्भीर॥
जिनथाय अनन्ता अतीत अनागत काल।
ए वीसे थानक आराधे गुणमाल॥२॥
आवश्यक वे वेला जिन वन्दन त्रिकाल।
थानक तप गिणत्रो सहस दोय सुकुमाल॥
काउसग्ग गुण स्तवना पूजा प्रभु बनासार।
इमसामी वत्सल करता भवनो पार॥३॥
समरीजे अहनिस गुणीए गोसुर साथा।
जक्ष जक्षनी सुरपति वेयावच्चकर ताथा॥
थानक तप विधि सुजेसे वे मन गे॥४॥
देवचन्द आणाए सानिधकरे तसुचंगे॥४॥

स्तुति ॥ ख० ॥३॥

आदिसार अलवेसर जगतपति, भविमन सायर चंदाजी। जमंडन दुखविहडण अद्भुत ज्योति सोहंदाजी सुख संपति कारण जग तारण, सेवे सुरनर इंदाजी करुणा कर जिनवर उपगारी, कामित सुरतरु कंदाजी ॥१॥ अरिहन्त सिद्ध प्रवचन आचारज स्थविर पाठक मन आणीजी। साधु नाणदंसण दस-मोपद, विनय चारित्र वखाणीजी॥ ब्रह्म क्रिया तप गोयम

जिनपद, समाधि अपूर्व श्रुत जाणोजी। श्रुत भक्ति तीरथ प्रभावना बीस थानक पहिचानोजी ॥२॥ श्रीमुख जिनेसर भाखे, ए पद सेवो प्राणीजी तीर्थंकर पद एहथी लहिये, जिन आगमनी वाणीजी ॥ ज्ञाता अंगे गणधर देवे, विवरीने घणी आणी जी। ए आराधन थी सिव पद लहिये, निरुपम सुख निसानी जी ॥३॥ तीन काल पांचे शक्रस्तव, देववंदन विधि कीजेजी। काउसग्ग परदक्षिणा गुणनो, विधिसुं जिन पूजीजेजी ॥ खमासमण बिहुंटंक पडिकमणो, स्तवना नित्य सुणीजेजी। कृपाचन्द्र सुयदे विपसाये; मनवांछित फल लीजेजी ॥४॥

स्तुति ॥ख० ॥४॥

वीस स्थानक सेवो भावधरि नितसेव ॥ १ ॥
अरिहन्त सकलए आराधे पदएव ॥ २ ॥
जैनागम पाए गणधर वाणी सेव ॥ ३ ॥
शासन देवी सहाये माणक आनन्दसेव ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन ख० ॥ १ ॥

(श्री सिद्धाचल भेटिये ए देशी)

वीस थांनक तपसेवीए। धरकरि शुभ परिणांम लालरे। तीजे भवसेंऽयोथको बांधे तीर्थंकर नाम लालरे॥ वी० ॥ १ ॥ तप रचना अधघणो कही । ज्ञाता अङ्ग मझार लालरे । सुगुणजी भवि तुमे भावसु' चित्तसे करिये उचार लालरे ॥ वी० ॥ २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहे । वीशथानक तप गृह लालरे । निरदुषण शुभ महुरते। उचरोजे ससनेह लालरे वी० ॥ ३ ॥ अरिहन्त सिद्ध प्रवचन नमु', सूरि थिवर उवझाय लालरे। साधु नांण दंसण अरु, विनय नमु' उलसाय लालरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ चारित्र बंभ क्रियापदे तप गोयम जिन इम लालरे । चारित्र ज्ञानेन श्रुत भणी नमु' तीर्थ पद वीश लालरे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीशदिवशमें एक हो पदगुणनो करमेव लालरे। अथवा दिन वीशांलगे, वीशे पद गुणमेव लालरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ एक ओली पटमासमें पूरिजो नविहोय लालरे ॥ फेरन वि करणीपड़े, पिछलो निष्फल जोय लालरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ छठ आठम उपवाससु', अथवा देखी शक्ति लालरे। पोसहकर आराधिये, देववांदे जिन भक्ति लालरे॥ वी० ॥ ८ ॥ सपूर्ण पद सेवता, पोसहरो नहि जोग लालरे। तोही सात पदे सही, पोसह करिए संजोग लालरे ॥ वी० ॥ ९ ॥ सूरि थिवर पाठक पदे,

साधु चारित्र सूजाण लालरे। गौतम तीर्थ पदे सही; सात थानक मनमान लालरे ॥ वी० ॥ १० ॥ पद पददीठ करे सदा, दोय-दोय जाप हजार लालरे। पडिकमणो दोयटकही, करिये पूजा सार लालरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ शक्ति मुजब तप कीजिये, एक ओली करो वीश लालरे। वीशा वीशी च्यारसे, तप संख्या कही एम लालरे ॥ वी० ॥ १२ ॥ जिस दिन जो तप करे; तिसके गुण चित्तधार लालरे। काउसग्ग परदक्षया; मुख गणिए नवकार लालरे ॥ वी० ॥ १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणे; कीजे जिनपद भक्ति लालरे। पूजन शुभमन साचवे, दिन दिन वढ़ती शक्ति लालरे ॥ वी० ॥ १४ ॥ मृतक जनम रुतु कालमें; कवि धार्यो उपवास लालरे। सो लेखे नहि लेखवो, तिकेवल तप जास लालरे ॥ वी० ॥ १५ ॥ सावज्जत्याग पणो करे, शोक न धारे चित्त लालरे। शील आभूषण आदरे; मुख सूं बोले सत्य लालरे ॥ वी० ॥ १६ ॥ जेठ, आषाढ़; वेशाखमें; मिगसर फागुण मांह लालरे इनषट माघ मांहिने, व्रत ग्रहिये बड़ भाग लालरे ॥ वी० ॥ १७ ॥ तप-पूरण हुवांथकां, उजमणो निरधार लालरे। कीजे शक्ति विचारने, उच्छव-विविध प्रकार लालरे ॥ वी० ॥ १८ ॥ वीस वीस गीणती तणा, पुस्तक पुठा आदि लालरे। ज्ञानतणी पूजा करे; मुक्ति जो चावे नित्य लालरे ॥ वी० ॥ १९ ॥ फलवधीनगरनी श्राविका कीधी विधि चित्त लाय लालरे। जनम सफल करवा भणी ओहीज मोक्ष उपाय लालरे ॥ वी० ॥ २० ॥

(कलश)

इमवीर जिनवतरणो आज्ञाधार चित्त मझारए। सहुदेस आगम तणी स्तवनाकरो तपविधि सारए॥ घसु नन्द सिद्ध चन्द वरसे चैत्र मास सुहंकरु। मुनिकेशरिशशि गच्छ खरतर भणी स्तवनामनहरु॥ २१ ॥ इति

स्तवन ॥ ख० ॥२॥

(आदि जिणंद मया करो—एदेसी)

वीस स्थानक पद ध्याइये, जगनायक पद लायकरे। अरिहंतादिक पद नमो सकल जन्तु हितकार करे॥ वि० ॥ १ ॥ सिद्धि प्रवचन आचारज नमो; स्थविर पाठक पद सोहेरे। साधु ज्ञान दर्शन सेवो, विनय सदा मन मोहेरे॥ वी० ॥ २ ॥ चारित्र पद मुझ मन वस्यो, गुणिजन करो नित सेवारे ब्रह्म क्रिया तप गौतम भवि जन लहे सुखमेवारे॥ वी० ॥ ३ ॥ नमो नमो जिन पद सगसे गुण गण अनन्त उजासीरे। संजम ज्ञान श्रुत पद सदा अनुभवरसए प्रकाशीरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ तीरथ पद पूजो भविजना, लौकिक अरुसठतजोयेरे। चउविह महातीरथ लोकोत्तर नेए भजीयेरे॥ वी० ॥ ५ ॥ ज्ञानीए तप जप वर्णव्या, बहु विध भवि हितकारी रे। वीश थानक समको नहीं, इण आगमें सुणो प्राणीरे॥ वी० ॥ ६ ॥ तप महिमा अधिक कहि, विधि युतछट्ठे अंगेरे। पूजे भवियण पदसहू, शिव सुखलहे मन चगेरे॥ वी० ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद जे लहे, पद सेवे भव तीजेरे। सप्तवली अष्ट-

मव करी, उत्कृष्टेजीव सीमेरे ॥ वी० ॥ ८ ॥ नगर अजीमगंज शोभतो, श्रावक श्राविका पुन्यवंतारे। वीसथानक सेवे माव थी, शासनउन्नति करंतारे ॥ वी० ॥ ६ ॥ तासतणे आग्रहथकी, स्तवन रच्यो माव आणीरे। द्रव्य मावे भवि आदरो, थानक पदहित जाणीरे ॥ वी० ॥ १० ॥ वीसथानक पद सेवतां, कठिन कर्म ते बीजेरे। अनुमव अधिक माणाथी, अजर अमर पद लीजेरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ संवत उगणोसे बयासीये, तिथ सातम बुध बारोरे। मास आश्विन कृष्ण पक्षमें, वीसथानक गुण गायोरे ॥ वी० ॥ १२ ॥

कलश

इम वीस थानक जगत वंदन, सकल जन आनंदनो।
मयो धन दिन आजनो वलि दुःख गयो दूर मनतणो।
जुगप्रधान जिनचारित्र सद्गुरु, वृहत्खरतर गणतणो।
पद्मप्रमोद कृपाजो कीए स्तवन माणक नित मणो ॥ १३ ॥

स्तवन ॥ ख० ॥३॥

आज आनन्द बहार रे तपसेवी मगनमें। सेवो मगनमें ध्यावो मगनसें, वीसथानक सुखकार रे ॥ तप० १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचनए नमता, थाये सुखत्र्यउदाररे ॥ तप० २ ॥ आचारज थिवरने पाठक, साधु नमो सुखकाररे ॥ तप० ३ ॥ ज्ञान दर्शन विनय सेवोए, चारित्र गुण अपाररे ॥ तप० ४ ॥ ब्रह्म पदको

भवि सेवो निशदिन, क्रिया सदा दिलधाररे तप० ५ ॥ बाह्य अभ्यंतर तपको ध्यावो, गौतम पद सिरदाररे तप० ६ ॥ जिन संजमकी भावना भावो, त्रिभुवनमें हितकाररे तप० ७ ॥ ज्ञान सदा जयवंतो नमता, पासे सुख अपाररे तप० ८ ॥ श्रुत पद नमिये भावे भविया, श्रुत वे जगत अधाररे तप ९ ॥ श्रीतीरथ पद पूजो गुणिजन, आणी हर्ष अपाररे तप० १० ॥ ए वीसे पद नित नित ध्यावो, सफल करो अवताररे तप० ११ ॥ जिन चारित्रसुरीश प्रसादे, माणक जय जय काररे तप० १२ ॥

स्तवन ॥ख० ॥४॥

(सुण २ सेत्रूंजगिरि स्वामी—एचाल)

अरिहन्तादिक पद नित नमिये, जेथी जग दुःख दूरे गमिये, निज स्वभावमें भवि नित रमिये; सुणो भवि भावसें हित आणी वीसथानक सेवो प्राणी, जिनसे कर्म कठिन होय हाणि ॥ सुनो० ॥ १ ॥ सिद्ध सेवो भवि चित आणी, रह्या एक तीस गुणना खाणी लोकलोक प्रकाशना नाणी ॥ सुणो० २ ॥ प्रवचन भक्ति भावथी करिये, संसार समुद्र सें तरिये, जिन वचन सदा सर दहिये ॥ सुणो० ३ ॥ गुण छत्तीसे रह्या सूरिराया जिन मतको अधिक दिपाया, पंचाचार पालन सुखदाया ॥ सुणो० ४ ॥ स्थविर पाठक तत्त्वना जांण, भापे जिनवर वचन प्रमाण, तम कमल हरण जग भाण ॥ सुणो ५ ॥ सोहे साधु सदा गुण

भरिया; सत्तवीस गुणे परवरिया, ज्ञानादिक गुणना दरिया सुणो० ६ ॥ ज्ञान दर्शनको दिलधारो, पाप कर्मथकी मनवारो रहो शुद्ध क्रिया अनुसारो ॥ सुणो० ७ ॥ विनय सेवो सदा सुखदाई, जिनसे जनम मरण मिट जाई, नित चारित्र संचित लाई ॥ सुणो० ८ ॥ सियल को सुरतरु समजांणी, क्रिया तप-सेत्रोसविप्राणी निसदिन पूजोजेही प्राणी ॥ सुणो० ९ ॥ गोयम जिन संयम धारो, प्रकटे अधिक अधारो होय जनम मरण छुटकारो ॥ सुणो १० ॥ ज्ञान भक्ति करो भवि प्राणी, श्रुति ज्ञानको मन तन आंणो, संघ भक्ति सदा सुखदाणी, ॥ सुणो० ११ तप महिमा ज्ञाता सूत्रमें जाणो, तीर्थंकर गोत्र बंधाणो भाखे जिनवर श्रीजगमाणो ॥ सुणो० १२ ॥ नेत्र वसु नन्द चन्द बखाणो, जिनचारित्रसूरि गुण खाणो, माणक मन तपमें भराणो ॥ सुणो० १३ ॥

स्तवन ॥ ख० ॥५॥

ध्यावोरी माइ वीसथानक पद ध्यावो। अरिहन्त सिद्ध प्रवचन ए नमतां मन वांछित सुख थाये ॥ ध्यावोरी ॥ आचा-रज स्थविरने पाठक साधु सेवे दुःख जाये ॥ ध्या० १ ॥ ज्ञान दर्शन विनय सेवाथी, चारित्र जग सुखकार ॥ ध्या०॥ ब्रह्म क्रिया तपको भवि ध्यावो, गौतमपद हितकार ॥ ध्या० २ ॥ जिन सजमको भविजन पूजो, ज्ञान तणा गुण गावो ॥ ध्या० ॥ श्रुत

पदको भवि ध्यावो निस दिन, तीर्थ सदा मन ध्यावो ॥ ध्या० ॥
॥३॥ प्रभु पूजा परभावना करिये, ऊजमणो सुविवेक ॥ ध्यान० ॥
ए तप महिमाना अधिकार, वर्णव्या ग्रन्थ अनेक ॥ ध्या० ॥
थानक तप सेवन्तां प्राणी, गोत्र तीर्थंकर बांधे ॥ ध्या० ॥ शुभ
भावे ए तपकी सेवा, माणक मनमें आराधे ॥ ध्या० ॥५॥

स्तवन ॥ त० ॥ ६ ॥

हांरे म्हारे प्रणमु सरसति मांगू वचन विलास जो ।
वोसेरे तपस्थानक महिमां गांइसुरे लोल ॥
हां० प्रथम अरिहन्त पद लोगस्स चौवोस जो ।
बीजेरे सिद्धास्थानक पन्द्रह भावसुंरे लोल ॥ १ ॥
हां० त्रीजे पवयण गुणी लोगस्स पीस्तालीश जो ।
चौथेरे आयरियाणं छत्रिसेनो सहीरे लोल ॥
हां० थेराणं पद पंचमे दस उदार जो ।
छट्ठे रे उवज्झायाणं पचवोसनो सहीरे लोल ॥२॥
हां० सातमें नमो लोए सव्व साहू सत्ताविस जो ।
आठमें नमो नाणस्स पंचमावसूंरे लोल ।
हां० नवमेंदरिसन सडसठ मनने उदार जो ।
दसमें नमो विनय दसवखाणीए रे लोल ॥ ३ ॥
हां० इग्यारमें नमो चारित्र लोगस्स सत्तर जो ।
बारमे नमो बमस्स नव गुणो सहिरे लोल

स्तवन ॥ सं० ॥ ७ ॥

(धण केसरकी क्यारीमा रूडो, फूल हजारीरे एहनी देशी) ॥
आज आणन्द वधाई म्हारे वाधी सोभ सवाईरे। साजन वीस थानक पद सेवो, जिम मनवांछित फल लेवोरे ॥ सी० १ ॥ वी० निरमल कायसुं कीजे त्रिकरण सुध ध्यान धरीजै ॥ सा० वी० ॥ अरिहंतादिक वीस पद दाख्या श्री जगदीसेरे। सी० २ वी० ॥ ~न। सेवन कीजे सहू, कठिन करम ते छीजेरे। सा० वी० ॥ मोटो तप यह कहिये भावे करी ते सरदहियेरे ॥ सा० ३ ॥ वी० ॥ शील संयमव्रत पाली दोषण मनना सब टालोरे० । सा० वी० ॥ एह वीसोपदराया सेवितभवि शिवपद पायारे सा० ॥ ४ ॥ वी० जे विधसुं आराधे ते तीर्थंकरपद साधैरे ॥ सा० वी० ॥ एहना गुण कहे सार सुरगुरु पिण न लहै पाररे ॥ सा० ॥ ५ वी० ॥ उदयापुरे मन रगे गुरु मुख विधि लहिये सुचंगेरे ॥ सा० वी० ॥ जोरावर वड़भागी तेहनी लय प्रभूसुं लागीरे। सा० ॥ ६ ॥ वी० ॥ उच्छव अधिक मंडाण, करि कीधो जनम प्रमाणरे०। सा० वी० ॥ उजमणा विधिमारी तिण किधी चित्त उदारीरे ॥ सा० ७ वी० ॥ संवत (१८९९) अठारनिनाण, आषाढ़ वदि बीज वखाणरे। सा० बी० ॥ रूडो कारज कीधो; धन खरची जग जस लीधोरे० सा० ॥ ८ वी० ॥ श्रीजिनमहेन्द्रसूरिन्दा, नितवांदे कीर्ति आनंदा रे ॥ सा० ९ ॥ ॥ इति ॥ *

---

* श्री बीसस्थानक लघुस्तवनं श्री काशी देश वाराणसी नगर्यां

॥ वीस स्थानक स्तुति ॥ त० ॥

पूछे गोतम वीर जिणंदा, समवसरण बैठा सुखकंदा, पूजित अमर सुरीन्दा केम निकाचे पद जिनचन्दा, कौनविध तप करता भवफन्दा; टाले दुरितह दंदा, तप भावे प्रभुजी गतनिंदा सुण गोतम वसभूति नन्दा, निर्मल तप अरविंदा, वीसथानक तप करत महिंदा, जिम तारक समुदाये वृन्दा, तिम ए सवो तप इंदा ॥१॥ प्रथमपदे अरिहन्त नमीजे, बीजे सिद्ध पवयणपद त्रीजे, आचारज थेर ठवीजे, उपाध्यायने साधु ग्रहिजे, नाण दसम पद विनय वहीजे, अगीआरमें चारित्र लीजे; बंभवय-धारीगांगणीजे किरीय-यां तवस्स करीजे, गोयम जिणाणं लहीजे चारित्र नाण श्रुत तीथ्थस्सकीजे, त्रीजे भव तप करत सुणिजे; ए सवो जिन तप लीजे ॥ २ ॥ आदि नमो पद सगले ठवीस बार पन्नर बारवली छत्रीस दश पणवीस, पांचने संडसठ सेर गनीस सत्तर नव किरिया पंचवीस, बार अठावीस चउवीस, सीत्तेर इगवन्न पांपीतालीस, पांच लोगस्स काउसग्ग रहिस,

---

श्री पार्श्वजिन प्रसादात् सुश्राविका सुन्नीजी—

॥ वाचनार्थ श्रेयोर्थं शुभम् ॥

बृहत्खरतर गच्छ भट्टारक गणाधीश श्री जं० यु० प्र० भ० श्री जिनमहेन्द्र-सूरिजीनां पट्टप्रभाकर जंगम युगप्रधान सकल भट्टारक शिरोमणि श्रीजिनमुक्ति सूरिजी विजयराज्ये वाचनाचार्य सत्यमाणिक्य गणि । शिष्य पण्डित माणिक्य-सुन्दरमुनि शिष्येण कृष्णचंद्र संतोषचंद्रेण लिखितः ॥

नोकर वाली वीस, एक २ पदे उपवास वीस, मास खटें एक ओली करीस, इम सिद्धान्त जगीस ॥ ३ ॥ शक्तें एकासुणु तीवीहार, छठ अठम मासखमण उदार, पडिक्रमणां दोय वार, इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक पद आराधन भवपार, उजमणुं विविध प्रकार, मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सीद्धाइ शासन रखवार, संघ वीघन अपहार, खीमावीजेय जस उपर प्यार, सुभ भवीयन धरमी आधार, वीर बीजे जयकार ॥४॥

श्री वीसस्थानक चैत्यवंदन ॥ त० ॥

पहिले पद अरिहंत नमुं बीजे सर्व सिद्ध ।
त्रीजे प्रवचन मन धरो आचरण प्रसिद्ध ॥१॥
नमो थेराणं पांचमें पाठक गुण छट्ठे ।
नमो लोय सव्व साहूणं जे छे गुण गरिट्ठे ॥२॥
नमो नाणस्स आठमें दर्शन मन भावो ।
विनय करो गुणवंत तनो चारित्र पद ध्यावो ॥३॥
नमो बभंवय धारिणं तेरमे किरियाणं ।
नमो तवस्स चवदमे गोयम नमो जिणाणं ॥४॥
चारित्र ज्ञान सुअस्स नेए नमो तित्थस्स जाणी ।
जिन उत्तम पद पद्मपने नमता होय सुखखाणी ॥५॥

॥ बीसस्थानक की सज्झाय ॥ ख० ॥

(.वीर सुणो मेरी वीनती एनी ढाल) विसथानक तप सेविजे, भव्य प्राणीरे आणो मन भाव, श्री अरिहन्त इम उपदोसे, ए तपनारे मोटा परभाव, वी० ॥ १ ॥ नमो अरिहन्ताणं गुणो पद, पहिलेरे मन हरख अपार; द्रव्यत भावत भेदसुं, जिनपुजारे करो आठ प्रकार वी० ॥ २ ॥ नमो सिद्धाणं एहवो, सुद्ध चित्त रे गुणौ बीजी ठांण, आराधो सिधचक्रनो, जिन थायरे निज जनम प्रमाण वी० ॥ ३ ॥ पवयणस्स नमो गुणो तीजै ठाणेरे करो नाण अभ्यास, भगति करो सिद्धान्तनी जिन पावोरे तुम लिलविलास वी ॥ ४ ॥ आयरियाणंनमो गुणौ, चौथे वोलेरे पूजो गुरु ना पाय नमो थेराणं पञ्चमे, गुणौ सेवोरे धरमी मुनिराय, व० ॥ ५ ॥ पण्डित गुरुने पूजिए, छट्ठे गुणिएरे नमो उवझाय, नमो सव्व साहु सातमे, वलि सेवोरे तपसी वहु जाण वी० ॥ ६ ॥ नमो नाणीणं

आठमें, गुणे भणिएरे नवतत्व सिज्झाय, नमो दंशन धारों गुणों, पाले नवमेंरे समकित सुखदाय वी० ॥ ७ ॥ विनय संपन्न नमो इसो, पद दशमेरे गुणिए शुभ ध्यान, विनय करो गुणवन्तनो, इण रीतै हो लहीए शिव, थान वी ॥ ८ ॥ इग्यारस थानक गुणौ' पडिकमणांरे सांझ सवार चारित्तस्स नमो इसो, पद ध्यावो रे शिवसुख दातार वी० ॥ ९ ॥ गुणों वंभयारीणं नमो, आठ पोहो-री रे करो पोसह लील, बारसें ठाणई पालिए, शुभ भावेरे निरमल गुण शील वी० ॥ १० ॥ नमो क्रियाधारी भणी' मन गुणीए नित तेरमें ठांण, सामायिक पीण लिजिए, दोष टालोरे बत्रीस प्रमाण वी० ॥ ११ ॥ तप अधिको करो चवदमे, नमो तपसीरे गुणिए मनरंग; तपसी सेवा कीजिए, वलि रहिएरे तपसीने संग वी० ॥ १२ ॥

(ढाल थंभनपुरी) अतिथदान बहु भावे दीजै, नमो गौयमाईण गुणिजे; पनरमो क्रिया एह, प्रतिमानूं भूषण पहिरावो; नमो जिणाणं ए पद ध्यावो, सोलमें धर्म सनेह ॥ १३ ॥ आठपोहरी पोसो विधि करिए ध्यान

नमो चारित्तसूस धरीये, एविसतरमठांणा नवो नांण उछरंगे भणिये नमो नाणय, गुणणौ गुणीये आठारसे परिमान ॥ १४ ॥ नमो सुयस्स गुणौ मन चंगे, पुस्तक पुजा करो बहुभंगे, ए उगुणो ससरीते नमो तीरथराध्यान धरावो संघ चतुर्विध भगति करावी, वीससें शास्त्र विदोत ॥ १५ ॥ ढाल दोयत्ण स्तुप्रते कैरै, गुणिये गुणाणी सुविशेषै, च्यारसौ उपवास पूरी ज्यारे, समकित गुण शुद्ध धरीजै ॥ १ ॥ ए वीस स्थानक विधि जानी रे, सेवो मनतु भट आणी, विधि तुंस्डे ए तप हीयरे, सो तीरथंकर पद लहीये, भावै स्तव चारित्रधारी रे द्रव्य भाव विधि सागरी सेवे, जे नरने नारीरे ते मोक्षतणा अधिकारी, ॥ १७ ॥ इम विसथानक तपतणी विधि शास्त्रने अनुसार ए. जे वहे नरने नारी विधिसुं धन्य तसु अवतार ए' रतनपुरवर संघ सुप्रकोर जगतनाथ जिणेसरो, तसु चरणपंकज प्रणमि भावे कहे बसतो मुनिवरो ॥ १८ ॥

॥ इति ॥

अंक०	पदके नाम	काउ लोगा.	खमा. समा	सा. थीया	अइ. दीक्षा	माला.
१	नमो अरिहंताणं	१२	१२	१२	१२	२०
२	नमो सिद्धाणं	३१	३१	३१	३१	२०
३	नमो पवयणस्स	२७	२७	२७	२७	१०
४	नमो आयरियाणं	३६	३६	३६	३६	२०
५	नमो थेराणं	१०	१०	१०	१०	२०
६	नमो उवज्झायाणं	२५	२५	२५	२५	२०
७	नमोलोएसव्वसाहूणं	२७	२७	२७	२७	२०
८	नमो नाणस्स	५१	५१	५१	५१	२०
९	नमो दंसणस्स	६७	६७	६७	६७	२०
१०	नमो विनयसंपन्नाणं	५२	५२	५२	५२	२०
११	नमो चरित्तस्स	७०	७०	७०	७०	२०
१२	नमो बमवधारीणं	१८	१८	१८	१८	२०
१३	नमो किरियाणं	२५	२५	२५	२५	२०
१४	नमो तवस्सीणं	१२	१२	१२	१२	२०
१५	नमो गोयमस्स	१२	१२	१२	१२	२०
१६	नमो जिणाणं	२०	२०	२०	२०	२०
१७	नमो चरणस्स	१७	१७	१७	१७	२०
१८	नामो नाणस्स	५२	५२	५२	५२	२०
१९	नमो सुयनाणस्स	२०	२०	२०	२०	२०
२०	नमो तित्थस्स	३८	३८	३८	३८	२०

वीसस्थानकके उजमणे की वस्तु ।

देवोपकरण २०

देरासर, कटोरी, रकेबी, जिनबिम्ब, स्थापना, आरती, मङ्गलदीप, अंगजुहने कलश, केशरकी पुड़ी, नौकारवाली, अष्टमङ्गलिक, चन्द्रवा, पूठोया, रूमाल, तोरण, छत्र, मोर पीछो, जीर्णोद्धार, मोरपिच्छी, चंदनके मुट्ठोया, बीस स्थानकजीके गट्टे, सिंहासन, कचोला, घंठी, तमेझा, मुख कोश, कामलि, धोती, उतरा संग, घंटा, तिलक, मुकुट, खसकूंची, धूपदाने, तोरण, छोटे कलश, वरासकी पुड़ियां, चांदीके तवक, केसरकी पुडिया, सोने का वरग, चांदी का वरग, थाली, चमर, कटोरी, चंदन घसने के चकले, हंडा, सोने के तवक, ध्वजाएँ, अगरबत्ती की पुड़िया ।

———

ज्ञानोपकरण २०

गुणनेकीटीप, सांपुष, पट्टी, कलम, दवात, पुस्तक, पूठा, ठवणी, रूमाल, विटांगणा, डोरा, पुस्तक रखने का वकस, काष्ट की पट्टी, सोपड़ा सापडी, चतरणा, वास-कुपा, कागज, हिङ्गलूकीपुड़िआं, सलेटपेनसिल, कवली, रूल।

चारित्रोपकरण २०

कम्बल, चोलपट्टे, ओघे ओघाडांडि, चदरें, औलियां, डांडे, तरपणी, पातरा, झोड, पूंजणीकी दंडिये, आसन, थापना, संथारिये, पांगरनी, मुहपत्ती; पूंजणी, दंडासन, चरवला चरवला का डांडि, इसके उपरान्त और भी गुरु गमसे देख देख लेना। ये सर्व वस्तु वीश वीश लेणा।

वीस स्थानक पद आराधन करने वाले राजाओं की

नामावली

१ अरिहंत पदके आराधनसे देवपालादिका सुखी हुए

२ सिद्ध पदके आराधनसे हस्तिपाल राजा को ज्ञान हुआ।

३ प्रवचन पदके आराधनसे भारतादिको ज्ञान हुआ।

४ आचार्य पदसे पुरुषोत्तम नृप तीर्थंकर हुआ।

५ स्थविर पदके आराधनसे पद्मोतर राजा तीर्थंकर हुए।

६ उपाध्याय पदसे महेन्द्रपाल राजा देवेन्द्र हुए।

७ साधु पदके आराधनसे वीरभद्र तीर्थंकर हुए।

८ ज्ञान पदसे जयन्त राजा तीर्थंकर हुए।

९ दर्शनसे हरि विक्रम जिन हुए।

१० विनय पदसे धन्ना मोक्ष गये।

११ चारित्र पदसे वरुणदेव जिन हुए।

१२ ब्रह्मचर्य पदसे चन्द्रवर्मा जिन हुए।

१३ क्रिया पदके आराधनसे हरिवाहन तीर्थंकर हुए ।

१४ तप पद से कनक केतु तीर्थंकर हुए ।

१५ गौतम पदसे हरि वाहन जिनवर हुए ।

१६ जिन पदसे जीमूत केतु जिन हुए ।

१७ संयम पदसे पुरन्दर तीर्थंकर हुए ।

१८ ज्ञान पदसे सागर चन्द्र तीर्थंकर हुए

१९ श्रुत पदसे रत्न चूड तीर्थंकर हुए ।

२० तीर्थ पदसे मेरु प्रभु तीर्थंकर हुए ।

* समाप्त *

॥ श्री रत्नाकर पच्चीशी ॥

[श्रीमद् रत्नाकरसूरि विरचित मूल संस्कृत का]

पद्यात्मक रहस्य अनुवाद

हरिगीत छन्द

मन्दिर छो मुक्तितणा, मांगल्य क्रीडाना प्रभु,
ने इन्द्र नर ने देवता, सेवा करे तारी विभु,
सर्वज्ञ छो स्वामी वली, सरदार अतिशय सर्व ना,
घणुजीव तुं घणुं जीव तुं, भंडार ज्ञान कलातणा. १

त्रण जगतना आधार ने, अवतार हे करुणातणा,
वली वैद्य हे दुर्वार आ, संसारनां दुःखोतणा,
वीतराग वल्लभ विश्वना, तुज पास अरजी उच्चरुं
जाणो छतां पण कहीं अने, आ हृदय हूं खाली करुं २

शुं बालको मां बाप पासे, बालक्रीड़ा नव करे,
ने मुखमांथी जेम आवे, तेम शुं नव उच्चरे,
तेमज तमारी पास तारक; आज भोला भावथी,
जेवुं बन्युं तेवुं तेमां कशुं खोटुं नथी. ३

मैं दान तो दीधुं नहिं, ने शियल पण पाल्युं नहि
तपथी दमी काया नहिं, शुभ भाव पण भाव्यो नहि,
ए चार भेदे धर्ममांथी, कांई पण प्रभु नवि कर्युं,
म्हारुं भ्रमण भवसागरे, निष्फल गयुँ निष्फल गयुँ, ४

हुं क्रोध अग्निथी बल्यो, वलि लोभ सर्प डस्यो मने,
गल्यो मानरूपी अजगरे, हूं केमकरी ध्यावुं तने !
मन मारुं माया जालमां, मोहन ! महा मुंझाय छे,
चढी चार चोरो हाथमां, चेतन घणा चगदाय छे, ५

मैं परभवे के आ भवे, पण हित कांई कर्युं नहि,
तेथी करो संसारमां सुख, अल्प पण पाम्यो नहि,
जन्मो अमारा जिनजी ! भव पूर्ण करवाने थया,
आवेल बाजी हाथमां, अज्ञानथी हारी गया, ६

अमृत झरे तुज मुखरूपी, चन्द्रथी तो पण प्रभु
भींजाय नहिं मुज मन अरेरे ! शुं करुं ? हूं तो विभू !
पत्थर थकी पण कठिनमारुं, मनखरे ? क्यांथी द्रवे !
मरकट समा आ मन थकी, हुं तो प्रभु हार्यो हवे !, ७

भमतां महा भवसागरे, पाम्यो पसाये आपना,
जे ज्ञानदर्शन चरणरूपी, रत्नत्रय दुष्कर घणा,
ते पण गया परमादना, वशथी प्रभु ! कहुं छूं खरुं,
कोनी कने करतार ! आ, पोकार हुं जईने करुं ८

ठगवा विभु आ विश्वने, वैराग्यना रंगो धर्या,
ने धर्मना उपदेश रंजन, लोकने करवा कर्या,
विद्या भण्यो हुं वाद माटे, केटली कथनी कहूं ?
साधु थईने व्यवहारथी, दांभिक अंदरथी रहूं ९

में मुखने मेलूं कर्यु, दोषो पराया गाइने,
में नेत्रने निंदित कर्या, परनारीमां लपटाइने;
वली चित्तने दोषित कर्युं, चिंती नठारुं पर तणु,
हे नाथ ! मारुं शुं थशे, चालाक थइ चूक्यो घणुं. १०

करे काळजाने कतल, पीडा कामनी बीहामणी,
ए विषयमां बनी अंध हुं, विडंबना पाम्यो घणी,
ते पण प्रकाश्युं आज लावी, लाज आपतणी कने,
जाणो सहु तेथी कहूं, कर माफ मारा वांकने ११

नवकार मंत्र विनाश कीधो, अन्य मंत्रो जाणीने,
कुशास्त्रनां वाक्योवडे हणी, आगमोनी वाणीने;
कुदेवनी संगतथकी, कर्मो नकामां आचर्या,
मति भ्रमथकी रत्नो गुमावी, काच कटका में ग्रह्या. १२
आवेल दृष्टि मार्गनां, मूकी महावीर आपने,
मैं मूढ़थिए हृदयमां, ध्याया मदनना चापने,
नेत्रबाणो ने पयोधर, नाभि ने सुन्दर कटी,
शिणगार सुन्दरीओ तणा, छटकेल थइ जोयां अती. १३
मृगनयनी सम नारीतणा, मुखचंद्र नीरखवावति,
मुज मन विषे जे रंग लाग्यो, अल्प पण गूढो अती,
ते श्रुतरूप समुद्रमां, धोया छतां जातो नथी,
तेनुं कहो कारण तमे, बचुं केम हुं आ पापथी. १४
सुन्दर नथी आ शरीर के, समुदाय गुणतणो नथी,
उत्तम विलास कला तणो, देदिप्यमान प्रभा नथी,
प्रभुता नथी तोपण प्रभु, अभिमानथी अक्कड़ करु,
चोपाट चार गतितणी, संसारमां खेल्या करुं १५
आयुष्य घटतुं जाय तो, पण पापबुद्धि नवी घटे,
आशा जीवननी जाय पण, विषयाभिलाषा नवी मटे,
औषध विषेकरु यत्न पण, हुं धर्मने तो नवि गणू,
बनी मोहमां मस्तान हुं, पया विनाना घर चणुं. १६

आत्मा नथी परभव नथी, वली पुण्य पाप कशुं नथी,
मिथ्यात्वीओनी कटु वाणी में, धरी कान पीधो स्वाद थी,
रवि सम हता ज्ञाने करी, प्रभु आपश्री तोपण अरे,
दीवो लइ कुवे पड्यो, धिक्कार छ मुजने खरे. १७
मैं चित्तथी नहिं देवनी, के पात्रनी पूजा चही,
ने श्रावको के साधुओनो, धर्म पाल्यो नहीं,
पाम्यो प्रभु नरभव छतां, रणमां रड्या जेवुं थयुं,
धोबीतणा कुत्तासमुं, मम जीवन सहु एले गयुं. १८
हुं कामधेनु कल्पतरु, चिन्तामणिना प्यारमाँ,
खोटा छतां झंख्यो घणुं, बनी लुब्ध आ संसारमां,
जे प्रगट सुख देनार ह्वारो, धर्म ते सेव्यो नहीं,
मुज मूर्खभावोने निहाली, नाथ ! कार करुणा कंइं. १९
मैं भोग सारां चिंतव्यां, ते रोग सम चिंत्या नहीं,
आगमन इच्छ्युं धनतणुं, पण मृत्युने प्रछ्युं नहीं
नहीं चिन्तव्युं में नर्क, कारागृह समी छे नारीओ,
मधुबिन्दुनी आशामहीं. भय मात्र हूं भूली गयो. २०
हुं शुद्ध आचारोवडे, साधु हृदयमां नव रह्यो,
करी कोमपर उपकारना, यश पण उपार्जन नव कर्यो,
वली तीर्थनां उद्धार आदि, कोई कार्यो नवि कर्यां,
फोगट अरे ! आ लक्ष, चोराशीतणा फेरा फर्यां २१

गुरुवाणीमां वैराग्यकेरो, रंग लाग्यो नहि अने,
दुर्जनतणा वाक्यो महीं, शांति मले क्यांथी मने ?
तरुं केम हुं संसार आ, अध्यात्म तो छे नहीं जरि,
तुटेल तलियानो घडो, जलथी भराये केम करी ? २२

मैं परभवे नथी पुण्य कीधुं, ने नथी करतो हजी,
तो आवता भवमां कहो, क्यांथी थशे ? हे नाथजी
भूत भावी ने सांप्रत त्रणे, भव नाथ ! हुं हारी गयो,
स्वामी त्रिशंकु जेम हुं, आकाशमां लटकी रह्यो. २३

अथवा नकामुं आप पासे, नाथ शुं बकवुं घणुं ?
हे देवताना पूज्य ! आ, चारित्र मुज पोतातणुं,
जाणो स्वरूप त्रण लोकनुं, तो माहरुं शुं मात्र आ,
ज्यां क्रोडनो हिसाब नहीं, ज्यां पाईनी तो वात क्यां? २४

त्हाराथी न समर्थ अन्य, दीननो उद्धारनारो प्रभु !,
म्हाराथी नहि अन्य पात्र, जगमां जोता जडे हे विभु !,
मुक्ति मंगलस्थान ! तोय मुजने इच्छा न लक्ष्मीतणी,
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी. २५

॥ इति रत्नाकर पच्चीशी ॥

अष्ट प्रकारी पूजा आदि के दोहों का संग्रह

जल—जलपूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश।
जलपूजा फल मुक्त होजो, मांगो एम प्रभु पास॥

चन्दन—शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभु मुखरंग।
आतम शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग॥

नव अंग पूजा के दोहा

अंगूठा—जल भरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत।
ऋषभ चरण अंगुठडो, दायक भवजल अंत॥

घुटना—जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश।
खड़ा खड़ा केवल लह्यु, पूजो जानु नरेश॥

हाथ—लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान।
कर कांडे प्रभु पूजना, पूजो भवी बहुमान॥

खंभा—मान गयुं होय अंशथी, देखो वीर्य अनंत।
भूजाबले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त॥

मस्तक—सिद्धशिला गुण उजलो, लोकांते भगवंत।
वसीया तेने कारण भवी, शिरशिखा पूजंत॥

ललाट—तीर्थंकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत॥
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत।

कंठ—सोल पहोर प्रभु देशना; कंठ विवर वर्तुल।
मधुर ध्वनि सुरनर सूण लीये गले तिलक अमूल॥

हृदय—हृदय कम उपशम बले, बाल्या राग ने रोष।
हिम दहे वनखंडने, हृदय तिलक संतोष॥
नाभि—रत्नत्रयी गुण ऊजली, सकल सगुण विश्राम।
नाभि कमलनी पूजना, करता अविचल धाम॥
पुष्प—सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप।
सुमजंतु भव्यज परे, करिये समकित छाप॥
धूप—ध्यान घटा प्रगटाविये, वाम नयन जिन धूप।
मिच्छत दुर्गंध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप॥
दीपक—द्रव्य दीप सुविवेकथी, करता दुःख होय फोक।
भाव प्रदीप प्रगट हुवे, भासित लोकालोक॥
अक्षत—शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल।
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाली सकल जंजाल॥
नैवेद्य—अणहारी पद में कर्यां, विग्गह गइइ अनत।
दूर करि ते दीजीए, अणाहारी शिवसन्त॥
फल—इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग।
पुरुषोत्तम पूजा करो, मांगे शिव फल त्याग॥
चॉवर—प्रभु पासे चॉवर धरी, ढाले इन्द्र उल्लास।
तिम आपन मन शुद्ध करी, करो चॉवर तास॥

* समाप्त *